

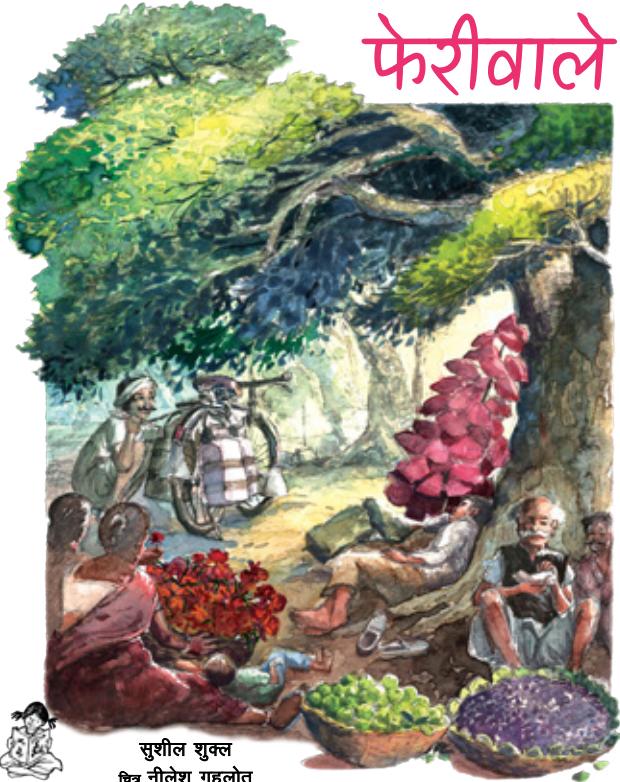
बाल विज्ञान पत्रिका, जनवरी 2024

# वृक्षमृक

नया साल  
मुबारक!

मूल्य ₹50

# फेरीवाले



सुशील शुक्ल  
चित्र नीलेश गहलोत

# खुशखबर

US AID और रूम टू रीड  
इंडिया द्वारा शुरू किए गए  
'चिल्ड्रंस लिट्रेचर अवार्ड्स  
2023' में उत्कृष्ट किताबों के  
प्रकाशन के लिए स्कलव्य  
को तीन पुरस्कारों से  
सम्मानित किया गया।

फेरीवाले - पिक्चर बुक ऑफ ईयर (8-12 वर्ष)

फेरीवाले - उत्कृष्ट चित्रों के लिए रनर-अप  
नीलेश गहलोत (8-12 वर्ष)



नीम तेरी निम्बोली पीली - उत्कृष्ट चित्रों के लिए रनर-अप  
वसुन्धरा अरोड़ा (3-8 वर्ष)

इन दोनों किताबों  
के लेखक सुशील  
शुक्ल हैं।

सुशील, नीलेश  
और वसुन्धरा को  
इन पुरस्कारों के  
लिए बहुत-बहुत

## बधाई!

# नीम तेरी निम्बोली पीली

सुशील शुक्ल  
चित्र वसुन्धरा अरोड़ा



# चक्कमक्क

अम्मी और अमरुद का पेड़	4
तुम भी बनाओ - पार्टी पॉपर - प्रभाकर	6
फिल्म चर्चा - दि टेल... - निधि गुलाटी	8
प्यारी मैडम - करन कटियार	12
बुड्डे के बाल - मुदित श्रीवास्तव	14
गणित है मज़ेदार - त्रिकोणीय संख्या -	
भाग 1 - आलोका कान्हेरे	17
गुबरैला - प्रमोद पाठक	20
भूलभूलैया	21
बाप रे बाप!... साँप - दुर्व	22
देखे-अनदेखे घोंसले -	
सुशील जोशी और प्रतिका गुप्ता	24
माथापच्ची	28
क्यों-क्यों	30
चित्रपहेली	34
मेरा पत्ता	36
किताबें कुछ कहती हैं...	43
तुम भी जानो	44



## सम्पादक

विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक

कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार

सुशील जोशी

उमा सुधीर

वितरण

झनक राम साहू

डिजाइन

कनक शशि

डिजाइन सहयोग

इशिता देबनाथ बिस्वास

सलाहकार

सी एन सुब्रह्मण्यम्

शशि सबलोक

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क

(रजिस्टर्ड डाक सहित)

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

एकलव्य

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,

वेबसाइट: <https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

## आवरण: नीलेश गहलोत

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।

एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल

खाता नम्बर - 10107770248

IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी

accounts.pitara@eklavya.in पर जरूर दें।

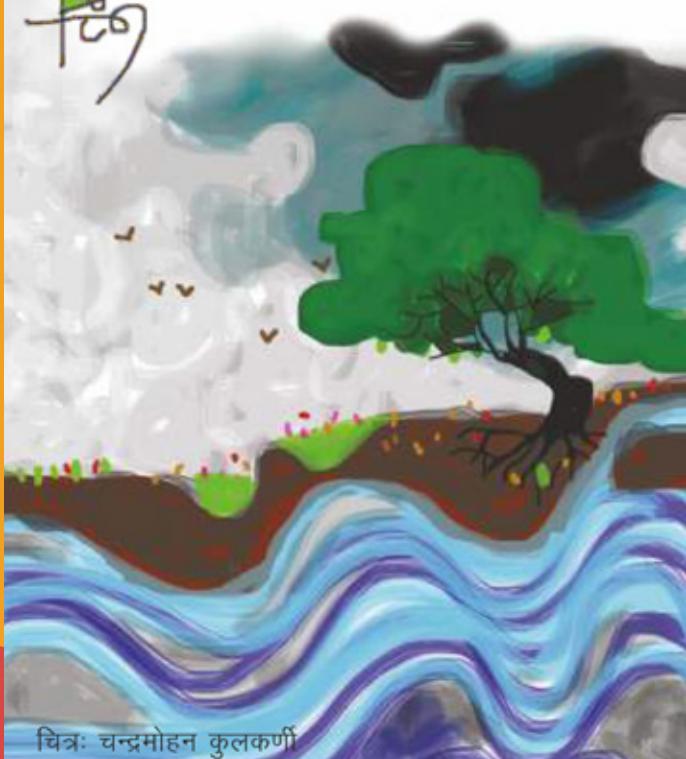
नदी चढ़ी है आना।  
तुम भी आना तुम भी आना  
आना तुम भी आना।

आए बादल घने उतर के  
उनसे हाथ छुआना  
हवा गा रही तुम भी गाना  
गाने में खो जाना।

नदी किनारे गोद धरा की हरा मखमली बाना  
वर्ही पेड़ पूरे पर छाया  
एक धोंसला  
सब चिड़ियों ने मेहमानों के लिए बनाया  
उसमें जा सो जाना।  
रात लोरियाँ नदी गाएगी  
पंख पसारे परी आएगी  
सुबह गाएगी चिड़िया रानी तुम्हें जगाने गाना।

नवीन सागर

नवीन  
सागर



चित्र: चन्द्रमोहन कुलकर्णी

चकमक कविता कार्ड पढ़ो और चाहो तो अपने  
दोस्त को इसी कार्ड के दूसरी तरफ इसके चिट्ठी  
लिखकर भेज दो।

कविता कार्ड के चार गुच्छे हर एक गुच्छे में बारह  
कविताएँ। एक की कीमत है सिक्के साठ रुपए। मैंगाने के  
लिए तुम चकमक के पते पर लिख सकते हो। या फिर  
सीधे ऑनलाइन मैंगा लो <http://www.pitarakart.in>

# अम्मी और अमरुद का पेड़

अनुपमा तिवाड़ी

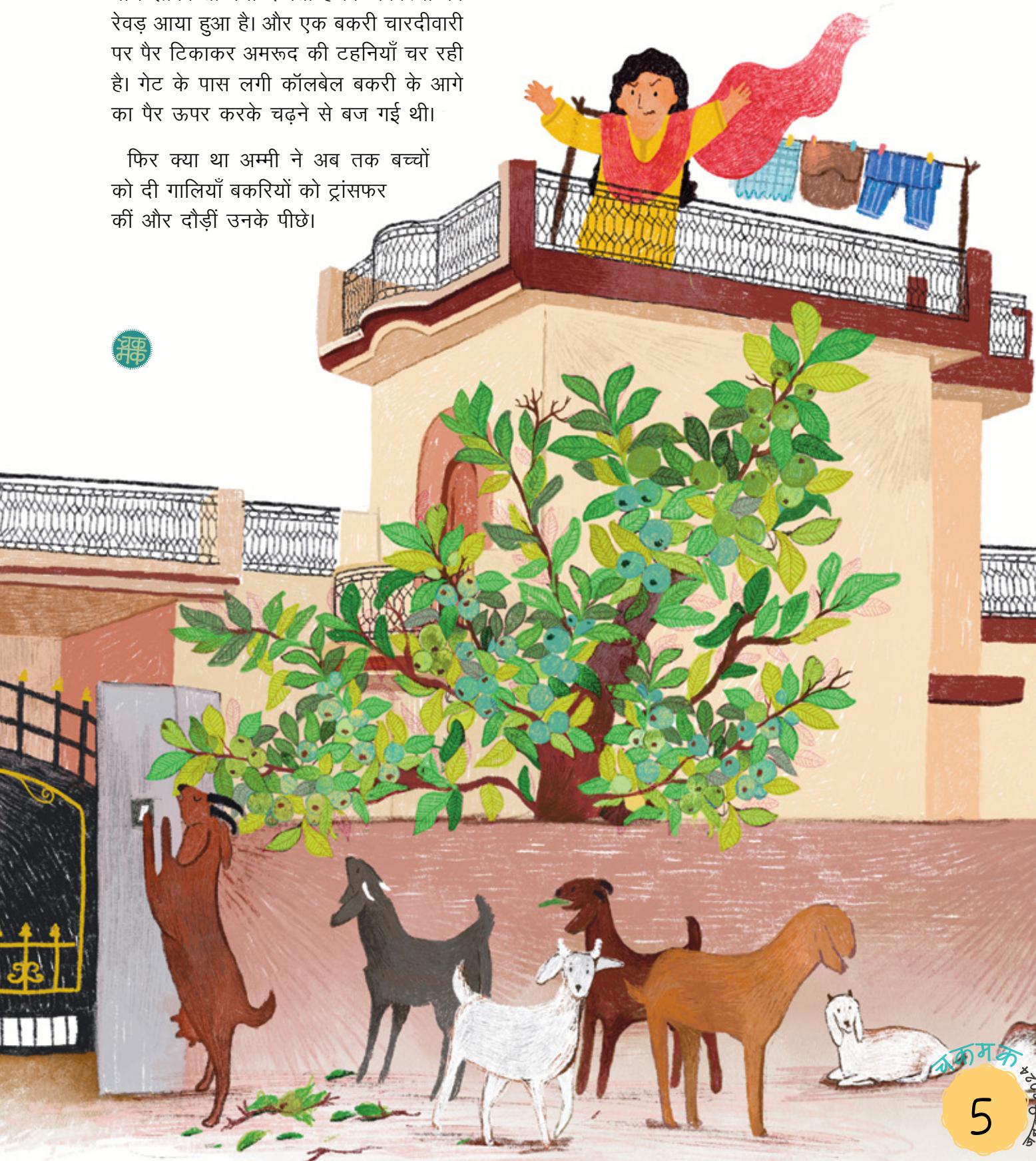
चित्र: सोनल गुप्ता

अम्मी को अपने पेड़ों से बहुत प्यार था। उन्होंने  
अपने घर की चारदीवारी के अन्दर अमरुद का  
एक पेड़ लगा रखा था। पेड़ पर जैसे ही अमरुद  
आने लगते आसपास से निकलते बच्चे कच्चे ही  
तोड़ लेते। अम्मी मन ही मन भुनभुनाकर रह जाती।  
वे बच्चों को देख तो नहीं पातीं। लेकिन कच्चे  
अमरुदों के साथ टूटी कोमल टहनियाँ देखकर  
उनका बड़ा जी जलता। वे कहतीं, “ये बच्चे भी ना  
अमरुद ही नहीं तोड़ते, टहनियों के सिरे तक तोड़  
डालते हैं। कभी कोई मेरे हाथ पड़ गया तो उसकी  
अच्छी मरम्मत कर दूँगी।”



एक दिन अम्मी छत पर टहल रही थीं। तभी घर की कॉलबेल बजी। उन्होंने दौड़कर छत से नीचे झाँका तो क्या देखती हैं कि बकरियों का रेवड़ आया हुआ है। और एक बकरी चारदीवारी पर पैर टिकाकर अमरुद की टहनियाँ चर रही हैं। गेट के पास लगी कॉलबेल बकरी के आगे का पैर ऊपर करके चढ़ने से बज गई थी।

फिर क्या था अम्मी ने अब तक बच्चों को दी गालियाँ बकरियों को ट्रांसफर कीं और दौड़ीं उनके पीछे।



# तुम्ही बनाओ

जुगाड़: पेपर कप, गुब्बारा, कैंची, कटर,  
टेप, रंग-बिरंगी पन्नी, थर्माकोल के  
गोले, कागज के छोटे-छोटे टुकड़े

प्रभाकर डबराल

1. पेपर कप के बेस को काटकर कप को खोखला कर लो।



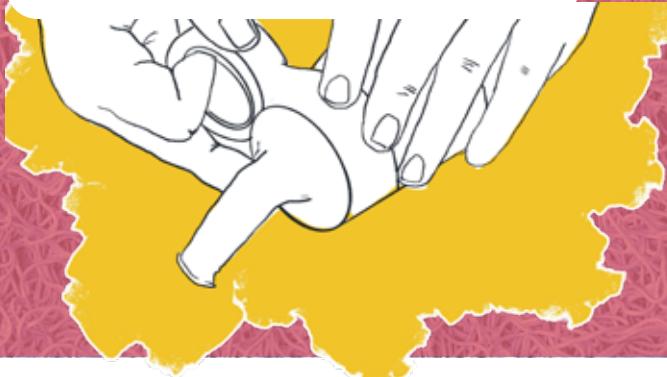
2. कैंची की मदद से बिना फूले गुब्बारे की नोक को काट लो। ध्यान रहे कि गुब्बारे की नोक ही काटना बस।



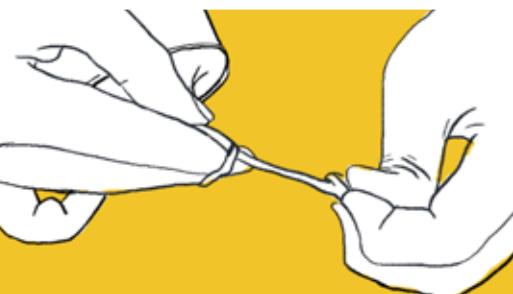
3. अब गुब्बारे को खींचकर कप के पीछे वाले हिस्से पर फिट कर लो।



4. फिर उसे एक मजबूत टेप से लपेट लो ताकि खींचने पर गुब्बारा और कप अलग ना हों।



5. गुब्बारे में दूसरी तरफ से गाँठ मार लो।



6. अब रंग-बिरंगी पत्ती, थर्माकोल के गोले और कागज को कैंची से बिलकुल छोटा-छोटा काट लो। इस कतरन को हम पार्टी पॉपर की कॉन्फेटी के रूप में इस्तेमाल करेंगे। अब इस कतरन को पेपर कप में भर लो।



## पार्टी पॉपर

7. पार्टी पॉपर को पॉप करने के लिए गुब्बारे के गाँठ मारे हुए हिस्से को खींचो और पार्टी का धूमधाम से मज़ा लो।



निर्देशक: जेन्स हैंड्रिक्ज, री ट्रेविक और मार्कस स्मिट

निर्माता: द ब्लैकहर्ट गैंग

रिलीज़: 2006

यूट्यूब लिंक: <https://www.youtube.com/watch?v=mk6j4wmpH9E>



निधि गुलाटी

इस बार एक ऐसी फिल्म के बारे में बात करते हैं जिसमें एक जादुई दुनिया रची गई है। द टेल ऑफ हाऊ नाम की यह फिल्म केवल एक फिल्म नहीं है, बल्कि ख्वाबों की दुनिया है। सबसे पहले फिल्म के एक तकनीकी हिस्से की बात करते हैं। इस फिल्म को बनाने में एनीमेशन का इस्तेमाल हुआ है। और क्या गज़ब का एनीमेशन है इसमें। उछलती-मचलती तस्वीरें रख दी हैं, एक तह के ऊपर दूसरी तह की तरह। कभी बिस्तर तह किए हैं तुमने? एक के ऊपर एक चद्दर, उसके नीचे कम्बल और बीच में गिलाफ। साउथ अफ्रीका के तीन दोस्तों ने चित्रों के साथ कुछ ऐसा ही किया है।

इन तीनों दोस्तों को तस्वीरें बनाने का शौक है। तीनों मिले, बैठे और बनाने लगे चित्र। ये चित्र उन्होंने कलम और स्याही की ड्राइंग के रूप में बनाए। फिर इन्हें रंग दिया। चित्र और उनके रंग पूर्वी एशियाई देशों की कला से प्रेरित थे। फिर कुछ सूझा तो इन चित्रों की काटपीट की। फिर इन्हें ठीक बिस्तरों की तह की तरह रखा एक के ऊपर एक। कहीं ये तहें करीने से हैं, तो कहीं बेतरतीब। फिल्म के हर सीन में 5-7 तहों से कहीं ज्यादा तहें हैं। यह जानकर तुम भौंचकके रह जाओगे कि फिल्म में लगभग 300 चित्र इस्तेमाल हुए हैं। और यह भी देखने लायक है कि हरेक चित्र कितनी बारीकी से बना है।

## एनीमेशन की जादुई दुनिया

इन चित्रों के कोलाज से बना है एक समुद्र और उसकी खूब नाचती हुई लहरें। समुद्र इस फिल्म में एक तिलिस्मी दुनिया को समेटे हुए है। इस जादुई दुनिया को दिखाना आसान नहीं है। इसे रचने में काल्पनिकता लगती है। इसे रंगते समय दोस्तों ने चटक रंगों का चुनाव किया है। जैसे कि तीखे लाल और नारंगी रंग से पक्षियों और अन्य जीवों को रंगा गया है। पानी के नीचे के दृश्यों में गहरे नीले और हरे रंग का इस्तेमाल किया गया है।

इसके साथ ही एक सीन से दूसरे सीन में पर्सपेरिट्व भी बदलते हैं। ध्यान-से देखो कि कैसे धीरे-से एक-एक लहर उभरती है और फिर पूरा

समुद्र उभरता है। सभी चित्रों में अनुपात भी उलट-पलट से हैं — घर छोटे-से हैं और ओट्टो (एक ऑक्टोपस) की बाजू लम्बी-सी है। फिल्म का म्यूजिक ओपेरा के अन्दाज में है। बार-बार सुनने पर उसकी लय लुभाने लगती है।

ऐसे बहुत-से पहलुओं के एक साथ आने से एक अलग दुनिया दिखने लगती है, उस दुनिया से अलग जिसे हम जानते-पहचानते हैं। एक जादुई रोमांच, एक तिलिस्म पैदा होता है जैसे कोई सपना हो। यदि तुम एक रहस्यमयी और सामान्य से परे दुनिया की कल्पना करो, तो उसमें क्या शामिल करोगे? हमें लिखना॥





### जादुई दुनिया में डोडो की मुशिकलें

इन तीन दोस्तों के ब्लैक हार्ट गैंग ने जो दुनिया बनाई, उसमें खूब सारे डोडो पक्षी हैं। कोई एक जूता पहने है, किसी के सर पर कलगी है, कोई तीन सिर वाला है, कुछ फूल के भीतर छिपे हैं तो और कुछ फूलों की पंखुड़ियों का घाघरा पहने खूब मस्ती कर रहे हैं। यह सभी डोडो रहते हैं एक बड़े-से पेड़ पर। और पेड़ खड़ा है एक ऑक्टोपस की पीठ पर। ओट्टो नाम के इस विशालकाय ऑक्टोपस के आतंक से डरकर रहते हैं सभी डोडो पक्षी। डोडो के बारे में और बात

करेंगे। पर पहले मैं बता दूँ कि फिल्म में डोडो की ज़िन्दगी मुशिकल है। क्योंकि ओट्टो उन्हें अपनी भुजाओं में लपेटकर खा जाया करता है। उनके जीवन में उम्मीद की किरण एडी द इंजिनियर के साथ आती है। एडी एक चतुर चूहा है जो योजना बनाकर बाकी के डोडो को बचाता है।

तो इस कहानी का विलेन है ओट्टो ऑक्टोपस। तुम्हें याद होगा पिछले साल हमने ऑक्टोपस को शिक्षक मान काफी कुछ सीखा था और उससे गहरी दोस्ती की थी। शेक्सपीयर मानते हैं कि ज़िन्दगी एक रंगमंच है और हम सब उसमें एक भूमिका अदा कर रहे हैं – कभी एक बेटी की, कभी एक छात्रा की, कभी दोस्त की तो कभी बहन की। शेक्सपीयर के किसी किरदार या नायक की तरह ऑक्टोपस भी अलग-अलग भूमिकाओं में हमारे सामने आ रहा है।

तो अब वापिस आते हैं डोडो पर। क्या तुमने डोडो के बारे में सुना है? डोडो मॉरीशस द्वीप में पाए जाने वाले बड़े आकार के पक्षी थे। लिखित जानकारी के अनुसार इन्सानों ने इन्हें सबसे पहले 1570 के आसपास देखा गया। लगभग 1680 के आसपास ये विलुप्त हो गए। इनके विलुप्त होने का कारण इन्सानों द्वारा शिकार और इनके द्वीप पर नए जानवरों का आना था। ये नए जानवर इन पक्षियों के अण्डों को खा जाते थे। ऐसा माना जाता है कि डोडो ज़्यादा बुद्धिमान नहीं थे, तभी तो बाकी जानवर उनके सभी अण्डों को खा गए और एक भी डोडो नहीं बचा। तो किसी को डोडो कहने का मतलब है कि उसकी बुद्धि कम है। यानी कि डोडो एक रूपक है।



The quiet, dark ocean  
of terror and typhoon,  
the faraway voices  
that sing to the moon

Lo! Treacherous house,  
Many more disappeared,  
until a visit from a  
named Eddy the Engine

## बुद्धि को इतनी अहमियत क्यों?

इस फिल्म की तकनीक भले ही खूबसूरत हो, लेकिन यह फिल्म इस रुद्धिवादी धारणा को नहीं तोड़ती। अन्य क्षमताओं की तुलना में बुद्धि को ज्यादा अहमियत मिले, हमेशा से ऐसा नहीं था। इन्सान अन्य प्राणियों से ज्यादा बुद्धिमान हैं, इसलिए वे बेहतर हैं; या इन्सानों के बीच भी ज्यादा बुद्धिमान लोग बेहतर हैं – यह विचारधारा और मान्यता आधुनिक दुनिया में बल पकड़ने लगी है। इतिहास में बुद्धि की हैसियत बदलती रही है, और आगे भी बदलती रहेगी। आज के समय की बात करें तो कृत्रिम बुद्धि (artificial intelligence) हमारे दरवाजे खटखटा रही है। यह इन्सानी बुद्धि को लॉघकर आगे बढ़ने लगी है। तो क्या निकट समय में यह हमसे बेहतर और श्रेष्ठ हो जाएगी? हम पर राज्य करेगी? जैसे हम इन्सान धरती के राजा बने बैठे हैं?

लेकिन यदि हम अन्य क्षमताओं के बारे में सोचें जैसे कि स्नेह और सहानुभूति, जटिल भावनात्मक स्थितियों को समझ पाना, नए विचारों और कला रूपों को रच पाना, नैतिक तर्क और न्याय आदि तो क्या इनमें कोई मशीन या कम्प्यूटर हमसे बेहतर हो सकता है? जानवरों के बीच, इन्सानों के बीच, इन्सानों और जानवरों के बीच, इन्सानों और मशीनों के बीच – क्या बुद्धि के आधार पर हम एक को बेहतर और दूसरे को कमतर मान सकते हैं? अगर नहीं, तो सभी जानवरों के बीच डोडो को सबसे बुद्ध क्यूँ कहें? फिल्म की यह बात मुझे कुछ जमी नहीं। तुम इस बारे में क्या सोचते हो?

# प्यारी मैडम

राम क्लास में अपने दोस्तों  
से गप लड़ाने में व्यस्त था।

आज शाम बैंट लेकर आना। तुम लोग  
हमेशा मुझसे ही बैंट मँगवाते हो...

मूल टेक्स्ट: करन कटियार, तीसरी, राजकीय प्राथमिक विद्यालय,  
टेढ़ाघाट, खटीमा, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

चित्र: अस्मिता कोरपेनवार

अचानक क्लास में नई मैडम आई।  
राम तुरन्त क्लास को चुप कराने का  
नाटक करने लगा।



नमस्ते मैडम!

नमस्ते। मेरा नाम रेनू है।  
मैं तुम्हारी नई मैडम हूँ।



नई मैंडम के पढ़ाने का तरीका भी नया था। वो डॉट्टी नहीं थी और सवाल नहीं आने पर प्यार से बार-बार समझाती थी।



एक दिन राम क्लास में आया तो देखा सभी बच्चे रो रहे हैं।

अरे! नहीं नहीं...

सभी बच्चे मैंडम को बहुत पसन्द करते थे। वो उन्हें 'प्यारी मैंडम' कहकर बुलाते थे।

अरे! तुझे नहीं पता रेनू मैंडम का ट्रान्सफर हो गया है। वह स्कूल छोड़कर जा रही है।



राम मैंडम से मिलने उनके कमरे की तरफ दौड़ा, पर तब तक मैंडम जा चुकी थीं।



राम और उसकी क्लास के सभी बच्चे प्यारी मैंडम को आज भी याद करते हैं।



अरे! होगा, आओ एक बार साथ में कोशिश करते हैं।

ताऊजी जब सो रहे होते तो कोई भी शोर नहीं मचा सकता था। ज़रा-सी भी आहट ताऊजी को जगा देती। उनकी नींद खुलते ही हम सब इधर-उधर छिप जाते। अगर कोई उनकी नज़र में आ गया, तो वे उसे डॉट नहीं लगाते थे, बल्कि किसी काम पर लगा देते थे। वे हमें बड़े बोरिंग-से काम पकड़ा देते थे। जैसे कि सर की चम्पी करना, कमरे में झाड़ू लगाना, गेंहूँ से कंकड़ अलग करना, बगीचा या पानी की टंकी या मुर्गी का दड़बा साफ करना वगैरह।

हम बच्चों की एक बड़ी गेंग थी। जब हम सब इकट्ठे हो जाते तो बहुत उधम और चिल्लपों मचाते। ऐसा खासकर दोपहर में ही होता था। स्कूल से लौटने के बाद वह हमारा खेलने का वक्त हुआ करता था। और उसी वक्त झपकियाँ आसमान से उत्तरकर ताऊजी की गर्दन और पलकों पर सवार होती थीं। घर पूरा खुला रहता

था। ताऊजी की खटिया छपरी में लगी होती थी। दोपहर के उस समय में चिंटू, चिंकी, चानी, मोना, बुलबुल और मैं अक्सर लुकाछिपी ही खेला करते थे ताकि ज्यादा शोर न हो।

जैसे-जैसे हम बड़े हो रहे थे वैसे-वैसे ताऊजी भी बुड़े हो रहे थे। और ताऊजी को अपने सर पर सफेद बाल शायद इसीलिए अच्छे नहीं लगते थे। एक दिन ताऊजी खटिया के बजाए छपरी के फर्श पर ही चटाई बिछाकर खर्टो भर रहे थे। मैं लुकाछिपी का दाम देते हुए वहाँ से भागा, बिना शोर किए। लेकिन पता नहीं कैसे उनकी नींद खुल गई। मैं डर गया।

उन्होंने आवाज़ लगाई, “इधर आ, कहाँ भाग रहा है। आ इधर बैठ और देख ज़रा सफेद बाल हों तो निकाल।” मैंने सोचा, “ये कैसा काम पकड़ा दिया ताऊजी ने? मैंने कभी ऐसा पहले नहीं किया था। शायद बाकी लोग कर चुके थे लेकिन किसी ने मुझे



# बुड्ढे के बाल

मुदित श्रीवास्तव

चित्र: शुभम लखेरा



बताया नहीं था। खेर मैं उनके सर के पास बैठ गया। मैंने कहा, “ताऊजी चम्पी कर दूँ?” वे बोले, “नहीं चम्पी तो अभी-अभी चिंटू से करवा ली है। तू सफेद बाल निकाल दे। बहुत ज्यादा हो गए हैं।”

मैंने एक सफेद बाल ढूँढ़ा और ज़ोर-से खींच दिया। ताऊजी की आह निकल गई। वे बोले, “अरे! इतनी ज़ोर-से थोड़ी तोड़ते हैं।” फिर उन्होंने मेरे सर से एक बाल तोड़कर बताया कि ऐसे तोड़ना। मैंने फिर आराम से सफेद बाल ढूँढ़-ढूँढ़कर तोड़ने शुरू कर दिए। बाकी लोग अभी तक छुपे हुए थे। मैं तो खेल भूल चुका था। मुझे अब बाल तोड़ने मैं मज़ा आने लगा था। कभी-कभी मैं थोड़ा ज़ोर-से भी खींच देता था यह देखने के लिए कि ताऊजी की अगर नींद लग गई हो तो मैं भागूँ।

बाल निकालते-निकालते शाम हो गई। बाकी लोग अन्दाज़ा लगा चुके थे कि आज ताऊजी के हाथों टिंकू पकड़ा गया है। ताऊजी उठे और बोले, “हाँ तो बताओ कितने बाल निकाले तुमने?” मैंने कहा, “अरे! मैंने सँभालकर थोड़ी रखे हैं। वो तो उड़ गए यहाँ-वहाँ।” तो ताऊजी बोले, “अच्छा! अगली बार सँभालकर रखना और मुझे गिनकर बताना। जाओ अब खेलो जाकर।”

अपनी गँग में मैं छोटा था सबसे। चिंटू भैया बड़े थे और तिकड़मबाज़ भी। वो बोले, “क्यूँ कितने बाल निकाले?” मैंने कहा, “अरे यार भाईसाब! गिनता कैसे?” उन्होंने कहा, “चल तुझे एक राज की बात बताता हूँ। जहाँ ताऊजी सोते हैं वहाँ पास मैं एक दीवार के खोपचे मैं एक पुड़िया रखी है। जा लेकर आ ज़रा।” मैं वो पुड़िया लेकर आया। उन्होंने पुड़िया खोलकर



दिखाते हुए कहा, “देख तो ज़रा इसमें क्या है?”  
“इत्ते सारे सफेद बाल!” मेरे मुँह से ज़ोर-से  
निकला। “अबे! धीरे बोल,” वो बोले।

उन्होंने फिर आगे कहा, “देख सफेद बाल ताऊजी के सर के पीछे की तरफ हैं। वह जब आईने में देखते हैं तो केवल सामने के बाल ही दिखते हैं, पीछे के नहीं। और ताऊजी के सर पर हाथ फेरते रहो तो वह जल्दी-से लुढ़क जाते हैं। बाल तोड़ते रहो तो जागते रहते हैं। तो ताऊजी के सर पर उँगलियाँ घुमाते रहो और जब वह सो जाएँ तो खेलने निकल लो चुपचाप। फिर शाम को जब वह पूछें तो इस पुड़िया में से बाल दिखा दो कि देखो आज आप के सर से इत्ते सारे बाल निकाले मैंने। और फिर पुड़िया उसी जगह छुपा दो ताकि कल किसी और के काम आ जाए!” मैंने कहा, “वाह! ये तो बढ़िया तिकड़म निकाली आपने!”

बस फिर क्या था! हमारा खेल ज़ोरों-शोरों से चलने लगा। अब ताऊजी का डर कम हो चला था। धीरे-धीरे गँग में यह तिकड़म

सबको पता चल रही थी तो हम और बेफिक्रे होते जा रहे थे।

उन दिनों साइकिल पर एक आदमी कॉटन केंडी बेचने आता था। हम सब उसे ‘बुड़ी के बालवाला’ बोला करते थे। और ताऊजी से हर दूसरे-तीसरे दिन इसे खरीदने की जिद करते। कभी हमें बुड़ी के बाल खाने को मिलते और कभी डॉट। एक दिन दोपहर को जब हम सब लुकाछिपी खेल रहे थे, तभी ताऊजी की आवाज आई, “अरे! ‘बुड़ी के बालवाला’ आया है, किसको चाहिए?” सब फटाफट इधर-उधर से निकलकर छपरी में आ गए। देखा तो ताऊजी वही पुड़िया लेकर बैठे हुए थे। हम घबरा गए। जब उनके पास पहुँचे तो वे हँसकर बोले, “बुड़ी के तो नहीं, बुड़डे के बाल हैं। किस-किसको खाना है?”



# त्रिकोणीय संख्याएँ - भाग 1

आलोका कान्हेरे  
अनुवाद: कविता तिवारी, चित्र: मधुश्री

गणित है  
मळेदार

पहले ये बताओ कि  
नीचे दिए गए चित्र में तुम्हें  
क्या दिखाई दे रहा हैं?

हैंडो दोस्तों! कैसे हो!  
नए साल की शुरुआत  
'गणित है मळेदार' के एक नए  
टॉपिक से करते हैं।



सही पहचाना तुमने,  
ये तो त्रिभुज हैं।

अब इनमें से हरेक त्रिभुज  
में दी गई गेंदों को गिनो।



पहले त्रिभुज में केवल 1 गेंद है। दूसरे त्रिभुज में 3 गेंदें हैं। इन सभी संख्याओं को एक टेबल में लिख लेते हैं।

त्रिभुज	गेंदों की संख्या
1	1
2	3
3	6
4	
5	

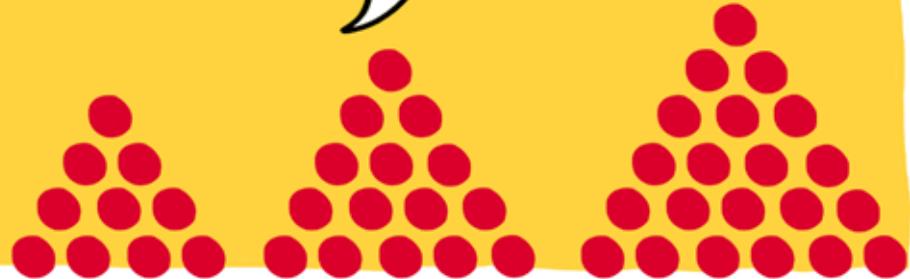
इस टेबल की आगे की संख्याएँ तुम भरना।

देखते हैं कि क्या हमें कोई पैटर्न मिल रहा है!



तुम सोच रहे होगे कि पहले बाले चित्र में त्रिभुज तो नहीं बन रहा है। बात तो सही है। पर फिलहाल इसे टेबल में लिख लेते हैं।

जल्दी ही तुम्हें पता चल जाएगा कि हमने इस 1 गेंद को टेबल में क्यों लिखा है।



अनुमान लगाओ कि इन संख्याओं को क्या कहते होंगे।

इन्हें त्रिकोणीय संख्याएँ  
(triangular numbers) कहते हैं।  
यह नाम इन्हें त्रिभुज की आकृति बनाने के कारण मिला है।

अब हम पिछली टेबल में एक कॉलम और जोड़ते हैं।



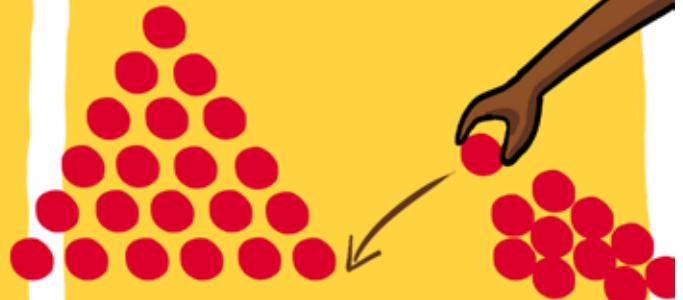
त्रिभुज	गेंदों की संख्या	अन्तर
1	1	---
2	3	$3 - 1 = 2$
3	6	$6 - 3 = 3$
4	10	$10 - 6 = 4$
5	15	$15 - 10 = 5$
6	21	$21 - 15 = 6$
7		

क्या तुम्हें इसमें कोई पैटर्न दिख रहा है?

ज्ञाहिर है कि 7वीं त्रिकोणीय संख्या पता करने के लिए हमें 21 में 7 जोड़ना होगा। ऐसा करने पर हमें संख्या 28 मिलेगी।



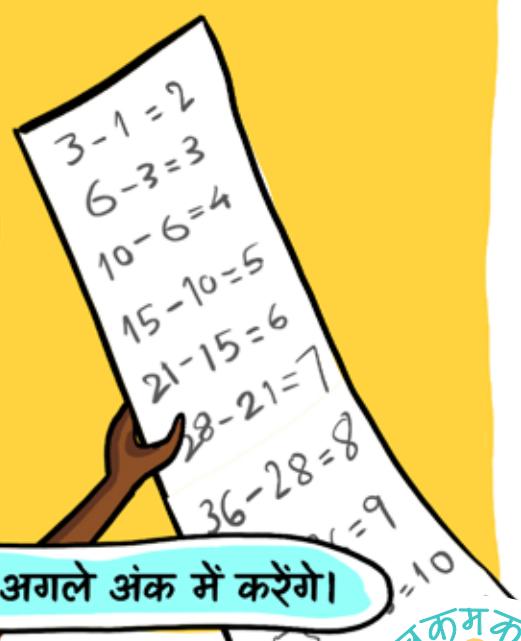
अब तुम 7 पंक्तियों वाला एक त्रिभुज बनाकर देखो कि उसमें गेंदों की संख्या 28 है या नहीं।



पर अब सवाल यह उठता है कि किसी भी त्रिकोणीय संख्या को उसके पहले की त्रिकोणीय संख्या के बिना कैसे पता करें।



यदि 51वें त्रिभुज में गेंदों की संख्या पता करनी हो तो क्या 50वें त्रिभुज में गेंदों की संख्या मालूम करना जरूरी है? तुम्हें क्या लगता है?



हमें लिखना। इसके बारे में और बातचीत अगले अंक में करेंगे।

गोबर को गेंद में ढालने का उस्ताद  
ज़बर खिलाड़ी था गुबरैला  
अपनी फुटबॉल लुढ़कार बढ़ा जाता था

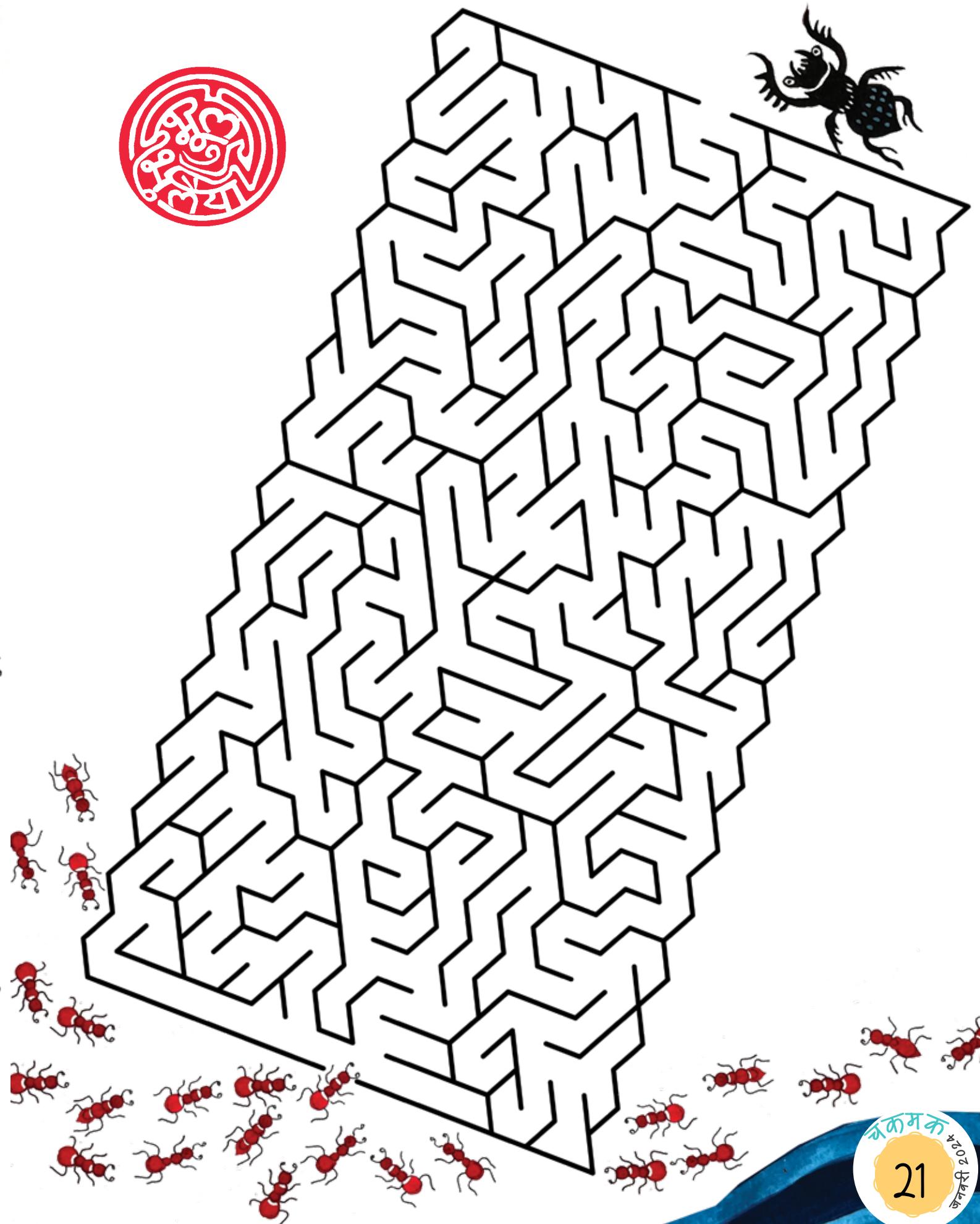
बीस-तीस नहीं सैकड़ों चीटियाँ जुटी हैं उसकी अन्तिम विदाई में  
हज़ारों और चली आ रही हैं कतार में  
स्क खिलाड़ी का ऐसा सम्मान तो बनता है



# गुबरैला

प्रमोद पाठक

चित्र: अमृता



# बाप रे बाप!... साँप

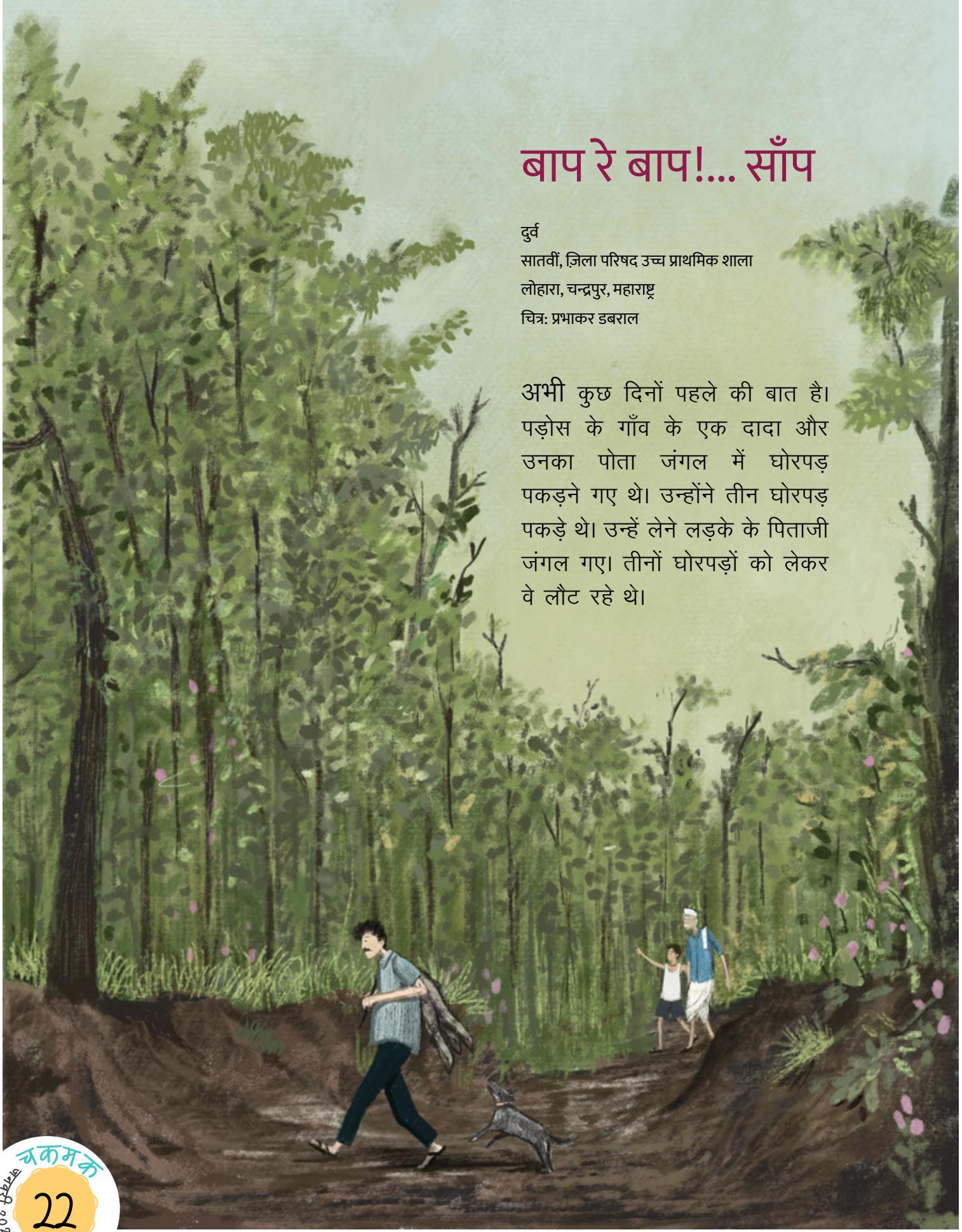
दुर्व

सातवीं, जिला परिषद उच्च प्राथमिक शाला

लोहारा, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

चित्र: प्रभाकर डबराल

अभी कुछ दिनों पहले की बात है। पड़ोस के गाँव के एक दादा और उनका पोता जंगल में घोरपड़ पकड़ने गए थे। उन्होंने तीन घोरपड़ पकड़े थे। उन्हें लेने लड़के के पिताजी जंगल गए। तीनों घोरपड़ों को लेकर वे लौट रहे थे।



लड़के के पिताजी आगे निकल आए। दादा और पोता पीछे रह गए। जंगल में एक बड़ी-सी माँद के पास उनका कुत्ता भौंकने लगा। तभी माँद से बहुत बड़ा साँप बाहर आया। और कुत्ते को पकड़ने का प्रयास करने लगा।

तब दादा ने कुत्ते के पैर पीछे खींचना शुरू किए। तो साँप ने दादा के अँगूठे को काटा और पकड़कर रखा।

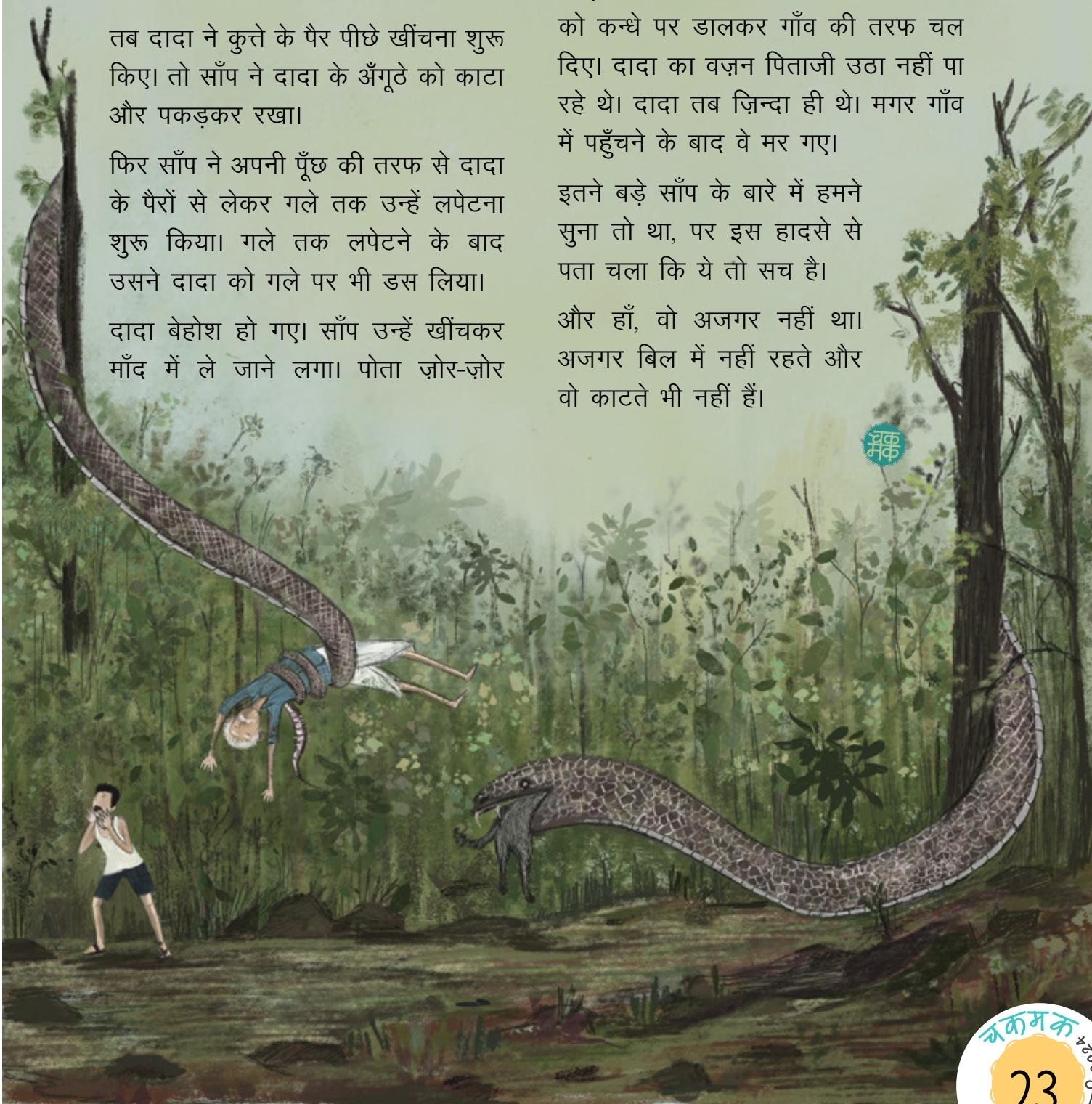
फिर साँप ने अपनी पूँछ की तरफ से दादा के पैरों से लेकर गले तक उन्हें लपेटना शुरू किया। गले तक लपेटने के बाद उसने दादा को गले पर भी डस लिया।

दादा बेहोश हो गए। साँप उन्हें खींचकर माँद में ले जाने लगा। पोता ज़ोर-ज़ोर

से चिल्लाया, “बापू, दादा मर गया। दादा मर गया।” उसकी चीखें सुनकर पिताजी भागे। साँप दादा को खींच ही रहा था। तभी पिताजी ने लकड़ी से साँप को ज़ोर-से मारा। साँप की पकड़ ढीली हो गई। वो दादा को छोड़कर माँद में भाग गया। पिताजी दादा को कच्चे पर डालकर गाँव की तरफ चल दिए। दादा का वज़न पिताजी उठा नहीं पा रहे थे। दादा तब ज़िन्दा ही थे। मगर गाँव में पहुँचने के बाद वे मर गए।

इतने बड़े साँप के बारे में हमने सुना तो था, पर इस हादसे से पता चला कि ये तो सच है।

और हाँ, वो अजगर नहीं था। अजगर बिल में नहीं रहते और वो काटते भी नहीं हैं।



अधिकांश पक्षी घोंसले बनाते हैं। कई लोगों को लगता है कि पक्षी ये घोंसले अपने रहने के लिए बनाते हैं। लेकिन वास्तव में घोंसले उनके अण्डों के इनक्यूबेशन के लिए बनाए जाते हैं। घोंसलों में अण्डे और कभी-कभी इनसे निकले चूज़े भी मौसम की मार और शिकारियों से महफूज़ रहते हैं। घोंसलों की एक विशेषता यह होती है कि वे अण्डों के अन्दर विकसित होते भ्रूण के लिए सही तापमान और नमी उपलब्ध कराते हैं।

पक्षी अलग-अलग तरह के घोंसले बनाते हैं। इनमें से कुछ हम यहाँ दे रहे हैं। कुछ हम अगले अंक में देंगे।

## देखे-अनदेखे घोंसले

सुशील जोशी और प्रतिका गुप्ता



### कुरेद या खरोंचकर बनाए गए घोंसले

कुछ पक्षी अपना घोंसला बनाने के लिए ज्यादा कुछ नहीं करते, बस ज़मीन को हल्का-सा खोदकर उसमें थोड़ी-बहुत घास-फूस, कंकड़-पथर वगैरह बिछा देते हैं। चूँकि घोंसले एकदम खुले में होते हैं इसलिए पक्षी अक्सर ऐसी जगह चुनते हैं जो उनके अण्डों या चूज़ों के रंग, पैटर्न वगैरह से मेल खाए या फिर उनके आसपास उनसे मिलते-जुलते कंकड़-पथर, टहनियाँ आदि बिखरा देते हैं ताकि शिकारी धोखा खा जाएँ।

खरबानक (*Burhinus capensis*) टिटहरी वर्ग का एक प्रसिद्ध पक्षी। इसे गुलिन्दा, चहा, लम्बी, खरमा, पाणविक आदि भी कहते हैं।



पन्डुबी या डुबडुबी (little grebe - *Tachybaptus ruficollis*)



काला हंस (black swan  
- *Cygnus atratus*)



कनाडाई हंस (canada goose  
- *Branta canadensis*)

## तैरते घोंसले

कुछ जलीय पक्षी जलीय वनस्पतियों के सरकण्डों, कीचड़ वगैरह से पानी पर तैरते हुए घोंसले बनाते हैं। अमूमन इन घोंसलों का आकार कटोरेनुमा होता है। घोंसले बहाव में बह न जाएँ इसके लिए पक्षी पानी में उगी वनस्पतियों से इन्हें बाँध देते हैं। और, सुरक्षा के लिए इन्हीं के बीच इन्हें थोड़ा छुपा भी देते हैं।



दसारी (eurasian coot - *Fulica atra*)





छोटा बसन्ता  
(Coppersmith barbet)



धनेश  
(Ocyceros birostris Melanerpes superciliaris)



दक्षिण भारतीय कठफोड़वा  
(Melanerpes superciliaris)

## कोटर घोंसले

चन्द पक्षी अपनी चोंच से पेड़ों के तनों में कोटर बनाते हैं और उसके अन्दर पंख-पत्तियाँ बिछाकर अण्डे देते हैं। शिकारियों को अण्डों तक न पहुँचने देने के लिए वे तरह-तरह की तिकड़म भी भिड़ाते हैं। कुछ पक्षी कोटर के आसपास तने की छाल को छीलकर गड़डे कर देते हैं। इनमें से गोंद रिसती हैं जो शिकारियों को दूर रखती है। कुछ पक्षी कोटर के आसपास बदबूदार कीट का लेप कर देते हैं।



भारतीय धूसर धनेश  
(Ocyceros birostris Melanerpes superciliaris)



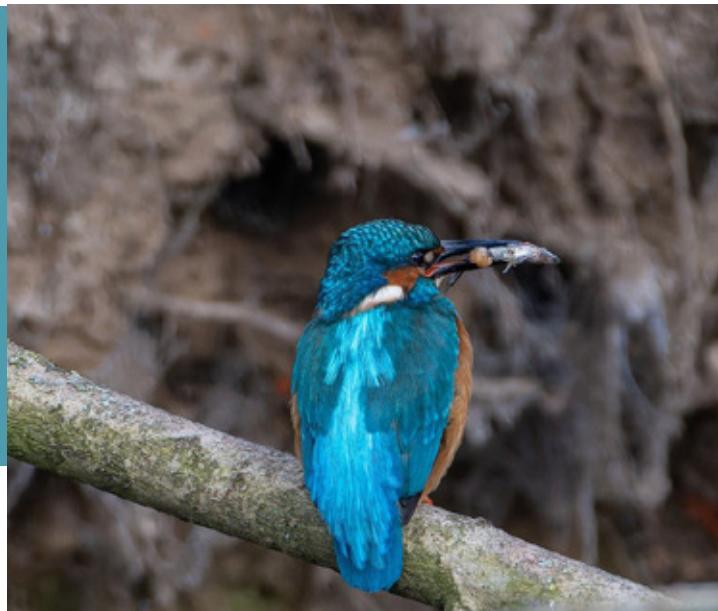
तोता (Rose-ringed parakeet - Psittacula krameri)



पश्चिम भारतीय कठफोड़वा  
(Melanerpes superciliaris)



नीली पूँछ वाला पतरिंगा (*Merops philippinus*)



किलकिला (Common kingfisher - *Alcedo atthis*)



उल्लू (*Athene cunicularia*)

## खोह घोंसले

कुछ पक्षी जमीन या नदी की ऊँची कटानों को खोदकर खोह बनाते हैं और उसके एकदम अन्तिम छोर में अण्डे देते हैं। गर्माहट के लिए इनमें घास-फूस भी बिछा लेते हैं। घोंसले प्रायः समूह में बनाए जाते हैं।



रेग अबाबील (*Sand martin - Riparia riparia*)

तुम भी अपने घर या आसपास की जगहों में घोंसलों को देखने की कोशिश करो। तुम्हें किस तरह के घोंसले दिखे? वे किन चीजों से बने हैं? क्या तुम पहचान पाए कि वो किस पक्षी का घोंसला है? इस सबके बारे में हमें लिखो या चाहो तो उन घोंसलों के चित्र बनाकर हमें भेजो।

साभार:  
स्रोत कैलेण्डर



2. रिया के पास कुछ गुब्बारे हैं। उसके पास जितने गुब्बारे हैं उसके एक चौथाई गुब्बारे और जोड़ने पर उसके पास 15 गुब्बारे हो जाते हैं। तो बताओ कि शुरुआत में उसके पास कितने गुब्बारे थे?

3. प्रश्न वाली जगह पर कौन-सी संख्या आएगी?

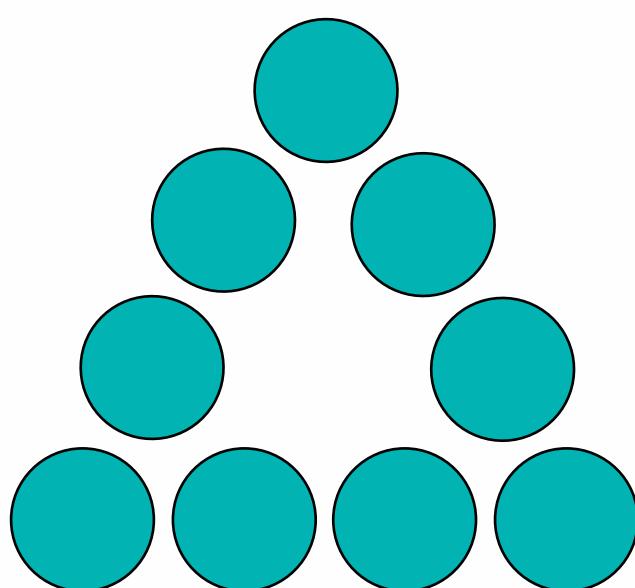
2	8	9
3	2	4
3	6	?

5. गोलों में 1 से 9 तक की संख्याएँ इस तरह भरो कि त्रिभुज की हर भुजा में लिखी संख्याओं का जोड़ 20 हो।

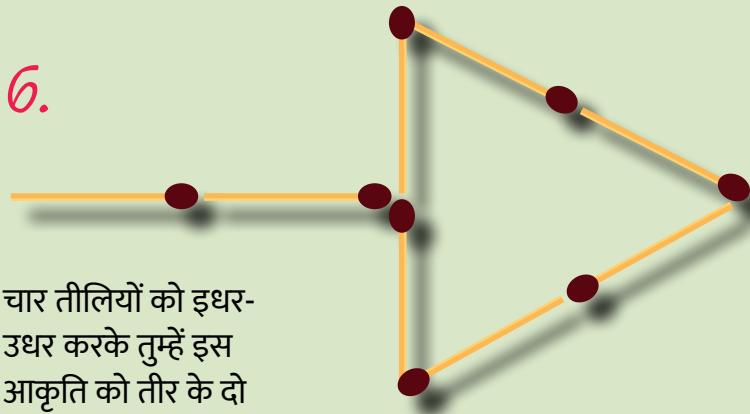
1. दी गई ग्रिड में कई वैज्ञानिकों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

मै	री	क्यू	री	चा	नी	जॉ	न्यू	ग्रा
वि	हो	मै	पा	ल्स	बी	न	ट	ह
क्र	मी	क्स	ज	डा	र	डॉ	न	म
म	भा	प्लां	यं	र्वि	ब	ल्ट	अ	बे
सा	भा	क	त	न	ल	न	ब्दु	ल
रा	मे	घ	ना	द	सा	हा	ल	आ
भा	य	री	लिं	ज	ह	ब	क	इं
ई	पि	क्यू	क	ग	नी	सु	ला	स्टी
क	के	ल्वि	र	सी	वी	र	म	न

4. एक व्यक्ति के पास 200 रुपए हैं। वह इन रुपयों को पाँच बच्चों में बाँटना चाहता है। वह तय करता है कि वह सबसे पहले सबसे छोटे बच्चे को पैसे देगा। और फिर हर बड़े बच्चे को उससे छोटे बच्चे से 2 रुपए अधिक देगा। बताओ कि सबसे छोटे बच्चे को उसने कितने रुपए दिए?



6.



चार तीलियों को इधर-उधर करके तुम्हें इस आकृति को तीर के दो निशानों में बदलना है। कैसे करोगे?

7.

चार-पाँच लोग अचानक एक सेठ के घर पहुँच जाते हैं। वह उसके घर को तहस-नहस कर सोने के सारे जेवर और पैसे ले जाते हैं। फिर भी वह सेठ उनकी शिकायत पुलिस के पास दर्ज नहीं करता। ऐसा क्यों?

8.



दी गई श्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग चूजे आने चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से चूजे आएंगे?

# नाया चर्ची

## फटाफट बताओ

मुँह पर रखे अपना हाथ बोला करती है दिन-रात जब हो जाती बेजुबान लोग ऐंठते उसके कान

(झिँग)

है पानी का मेरा चोला हूँ सफेद आलू का गोला कहीं उलट यदि मुझको पाओ लाओ-लाओ कहते जाओ

(लार्डि)

बारिश, सर्दी या धूप कड़ी हो रास्ते पर पथर या कील गड़ी हो इन सबसे मैं तुम्हें बचाऊँ फिर भी हर दिन रगड़ा जाऊँ

(फ़्रूट)

लेकर सारी दुनिया का हाल सुबह आ धमके खबरीलाल (प्राइज़िम)

पढ़ने में लिखने में दोनों में मैं आता काम पैन नहीं, कागज़ नहीं, जल्दी बताओ मेरा नाम (प्रश्न)

यह पहेली शिव नाड़र स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश के चौथी कक्षा के छात्र सम्भव जैन ने भेजी है।

जवाब पेज 42 पर



क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था:

सर्दी के मौसम में अक्सर बच्चों को ठण्डी चीजें खाने-पीने को मना किया जाता है यह कहकर कि ज़ुकाम हो जाएगा। क्या तुम्हें इस बात में सच्चाई लगती है। यदि हाँ, तो क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचर्ष जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक के लिए सवाल है:

जीवों के संरक्षण के कई कारण हैं। तुम्हारे हिसाब से प्रमुख कारण क्या है, और क्यों?

तुम्हारा मन करे तो तुम भी अपने जवाब हमें भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें [chakmak@eklavya.in](mailto:chakmak@eklavya.in) पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

## चंकमंक

एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्टरी के पास, भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

हाँ, यह सच्चाई है। पर सर्दी को भी तो मन होता होगा शरारत करने का, दूसरों को परेशान करने का। जैसे छोटे बच्चे नाक में दम करके रखते हैं, सर्दी वैसे नाक में दम तो नहीं करती। पर नाक ज़रूर गीला करती है।

अनामिका, नौवीं, अंजीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

पिछली सर्दियों में मैं अपनी नानी के घर गई। वहाँ एक अमरुद बेचने वाला आया। मैंने अपनी अम्मी से कहा कि मुझे अमरुद दिलवा दो। मेरी अम्मी ने मना कर दिया। लेकिन मैंने छुपकर नानी से पैसे ले लिए और अमरुद खा लिया। फिर मुझे ज़ुकाम, खाँसी और बुखार हो गया। फिर मेरी अम्मी ने कहा कि मैंने मना किया था कि अमरुद मत खाना। फिर भी तूने मेरी बात नहीं मानी और अमरुद खा लिया।

इसरा, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय बंगला पूरी, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

सर्दियों की हुई शुरुआत  
मम्मी की शुरू हुई डॉट  
मम्मी कहे आइसक्रीम जो खाए  
हरदम दवा ही खाता जाए

मम्मी को बस यही भाए  
बार-बार चाय ही पिलाती जाएँ  
मम्मी को कोई तो समझाएँ  
आइसक्रीम हर मौसम में भाए

लाल-पीला, हरा रंग हमारे सपने में आए  
काश हर रोज़ आइसक्रीम कोई हमें खिलाए  
जितनी भी खाओ मन हमेशा उसके लिए ललचाए  
रचित कुमार, पन्द्रह साल, मंजिल संस्था, दिल्ली

क्यों क्यों

हमें सर्दियों में ठण्डी चीज़ें नहीं खानी चाहिए क्योंकि ठण्डी चीज़ें खाने से बहुत सारी बीमारी जैसे कि बुखार, जुकाम और खाँसी हो जाती है। इसलिए सर्दियों में ठण्डी चीज़ें नहीं खानी चाहिए। पापाजी के मना करने के बाद भी मैंने सर्दियों में ठण्डी कुल्फी खाली। मुझे जुकाम और उसके बाद खाँसी और बुखार भी हो गया और मुझ में बहुत पैसा लग गया और मैं बहुत दिनों तक स्कूल भी नहीं आया।

## मयंक, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

मुझे इस बात में बिलकुल भी सच्चाई नहीं लगती कि सर्दी के दिनों में ठण्डी चीज़ें खाने से जुकाम होता है। लेकिन यह बात भी सही नहीं है कि हमें ठण्डी के दिनों में सीधे आइसक्रीम पर ही टूट पड़ना चाहिए। क्योंकि आइसक्रीम फ्रीज़र में रहने के कारण कुछ ज्यादा ही ठण्डी हो जाती है। मुझे कुछ दिनों पहले जुकाम हुआ था। लेकिन मैंने जान-बूझकर गर्म पानी नहीं पिया। मैं ठण्डा पानी ही पीता रहा। इसके बावजूद मेरी सर्दी ठीक हो गई।

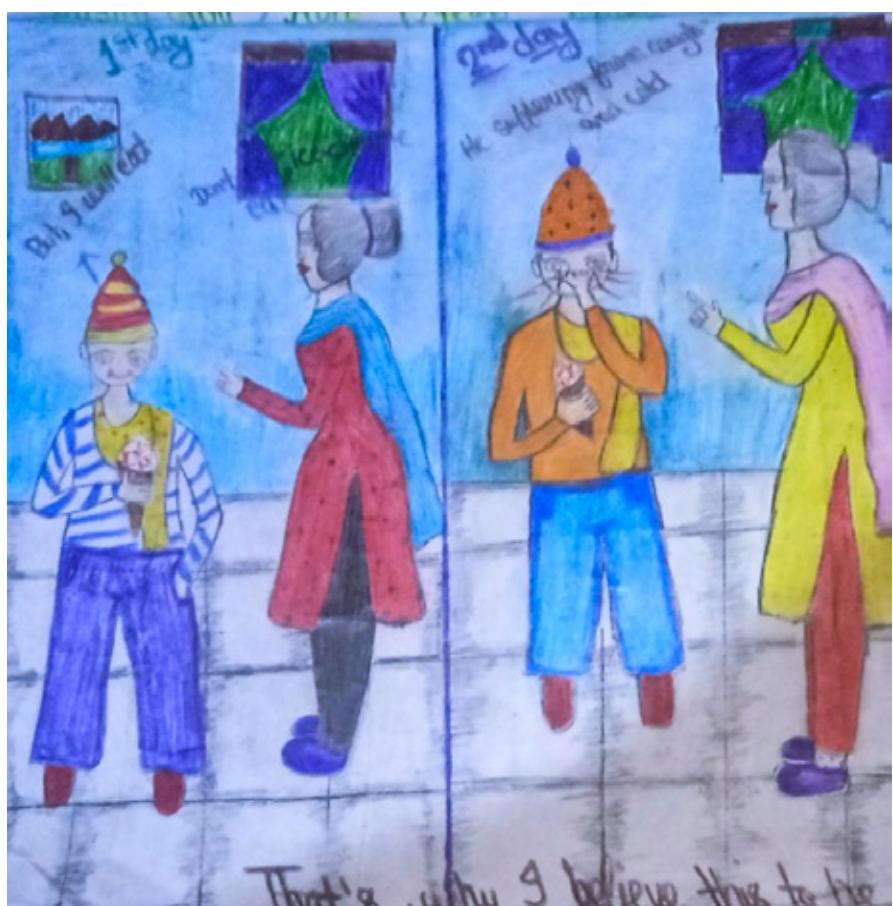
तेजस्वी कुमार साहू, आठवीं, अ.जी.म प्रेमजी  
स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

मुझे यह बात ठीक लगती है कि जब हम सर्दी के मौसम में ठण्डी चीज़ें खाते हैं तो हमें जुकाम हो जाता है। मम्मी-पापा चिन्तित हो जाते हैं। और हम पापा से पैसे भी माँगें तो देते नहीं। और जब पापा पैसे देते हैं तो मम्मी कहती हैं कि नहीं, नहीं इसे पैसा मत दो। बाहर जाकर ठण्डी-ठण्डी चीज़ें खाएगा। फिर पैसा खर्चा होगा।

रागिनी, चौथी, अजीम प्रेमजी स्कल, धमतरी, छत्तीसगढ़

सर्दी में ठण्डी चीज़ें खाने से जुकाम हो जाता है क्योंकि ठण्डी चीज़ें शरीर में कफ बनाने का काम करती है। और इस मौसम में बच्चों की प्रतिरक्षा प्रणाली कमज़ोर हो जाती है। जो बच्चों की बीमारी का कारण बनती है।

## हर्ष परसाई, पाँचवीं, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश



चित्र: सृष्टि, तेरह साल, मंजिल संस्था, दिल्ली

कई बच्चों को सर्दी के मौसम में सर्दी हो ही जाती है। तो कुछ बच्चों को नहीं। यह सबके लिए सही हो सकता है, पर हमारे लिए नहीं। नन्हे-मुन्हे बच्चे सर्दी-जुकाम के चक्कर में आइसक्रीम-कोल्डड्रिंक नहीं खा-पी पाते। अब बच्चों का मन भी कहाँ मानता है।

चीज़ खाने के बहाने हम भी चुपके-चुपके आइसक्रीम खाकर आ जाते हैं। और फिर बाद में डॉट के साथ-साथ कड़वी दवाइयाँ और पिचकारी यानी कि इंजेक्शन भी लेने पड़ते हैं। और फालतू में मम्मी जोकर बना देती हैं। स्वेटर, टोपा, मोज़े, शॉल सब पहना देती हैं। और तब पता चलता है कि चुपके-चुपके आइसक्रीम नहीं खानी चाहिए। पर हम नहीं मानते। ठीक होने के बाद फिर आइसक्रीम की सवारी निकल पड़ती है।

## काजल ढाल, नौवीं, शासकीय माध्यमिक हाई स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

एक बार मैं शरद मेला धूमने गया। मैंने पापा से आइसक्रीम खाने की ज़िद की। पापा ने मना किया। मैं नहीं माना। मैंने आइसक्रीम खाई। अगले दिन मुझे जुकाम हो गया। मेरी नाक बहने लगीं और खूब छींकें आईं। मैं रात भर सो नहीं पाया। माँ ने दवा के साथ गर्म काढ़ा दिया। तब से मैं इतना डर गया कि मैं खुद ही सर्दियों में आइसक्रीम नहीं खाता।

दीपक तिवारी, पाँचवीं, कम्पोजिट स्कूल, धुसाह,  
बलरामपुर. उत्तर प्रदेश

मुझे यह बात सच नहीं लगती। क्योंकि सर्दी के मौसम में सूक्ष्मजीवों की वृद्धि कम होती है। सूक्ष्मजीव लाभदायक व हानिकारक दोनों ही होते हैं। कुछ सूक्ष्मजीव जिनसे हानि होती है हमारे भोजन के माध्यम से शरीर में जाते हैं। जिनसे हमें सर्दी-जुकाम होता है। लेकिन सर्दी के मौसम में इन जीवों की वृद्धि कम होती है।

जलेश्वरी साह, आठवीं, अजीम प्रेमजी स्कल, धमतरी, छत्तीसगढ़

मेरे पापा मुझे सर्दियों में ठण्डी चीज़ें खाने को मना करते हैं। लेकिन मैं तो खूब ठण्डी चीज़ें खाता हूँ। रात को ठण्डा पानी भी पी लेता हूँ। रोज़ दही भी खाता हूँ। मुझे कभी जुकाम नहीं हुआ। मुझे नहीं लगता है कि सर्दी के मौसम में ठण्डी चीज़ें खाने-पीने से जुकाम होता है।

कौशिक, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय बंगला पुठरी, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

सर्दी के मौसम में मैं शादियों-पार्टियों में जब भी आइसक्रीम खाता हूँ तो मेरे गले में दर्द होने लगता है। कभी-कभी ज्यादा ठण्डी चीज़ खाने से मेरा पेट भी दर्द करने लगता है। इसलिए सर्दियों में हमें ज्यादा ठण्डी चीजें खाने से बचना चाहिए।

अभिनीत मीना, पाँचवीं, नर्मदा वैली इंटरनेशनल स्कॉल, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

हम सब मामी के घर गए थे। तब हम सब ने आइसक्रीम खा ली थी। फिर हम सब बीमार पड़ गए थे। फिर हम सबने दवा खाई। तभी भी हमारा बुखार ठीक नहीं हआ।

सनैना प्रजापति, पाँचवीं, कम्पोजिट स्कल, धसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मुझे इस बात में सच्चाई लगती है। क्योंकि मम्मी-पापा को पता है कि यदि बच्चों को जुकाम हो गया तो बच्चों की नाक से धाराएँ बहेंगी जो इनसे सँभाली नहीं जाएँगी। और इन्हें स्कूल ना जाने और बिस्तर पर आराम फरमाने का बहाना मिल जाएगा।

मीनाक्षी, नौवीं, अङ्गीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

सर्दी हो तो जाती है लेकिन जब तक हो नहीं जाती तब तक मानता कौन है। और मुझमें इतना ज्ञान कहाँ से आ रहा है आप यही सोच रहे होंगे। क्योंकि जो मैं आपको बता रहा हूँ वैसा कभी मैं भी था। और मुझे अभी बुखार है।

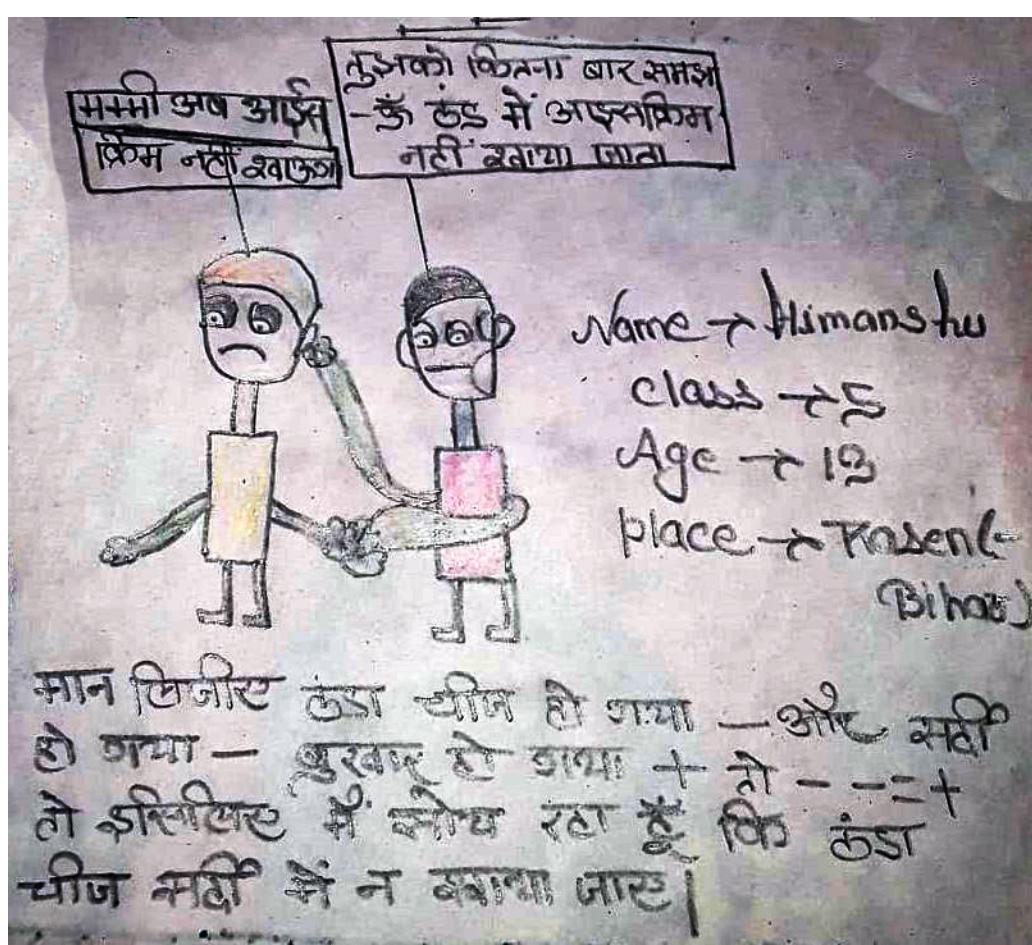
अभय सिंह, छठवीं, ऑक्सफोर्ड कॉन्वेंट स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

ठण्डी में छोटों बच्चों को सर्दी हो जाती है क्योंकि ठण्डी में अपना शरीर ठण्डा होता है। और अचानक से इतना ठण्डा पेट में जाएगा तो बच्चों को बुखार या सर्दी हो सकती है।

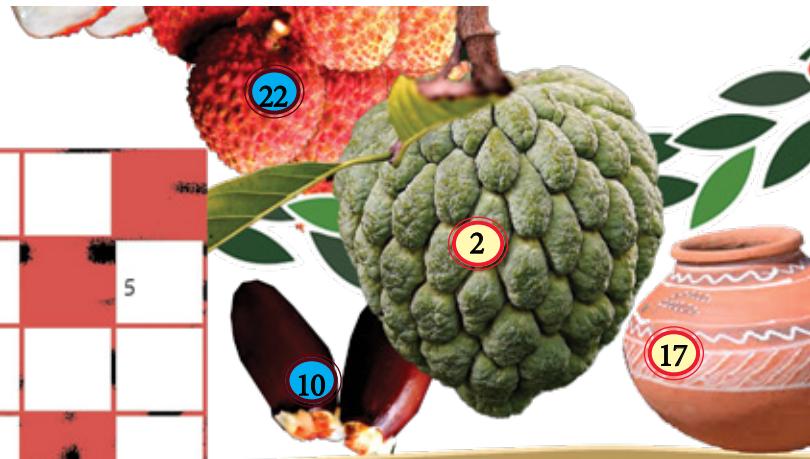
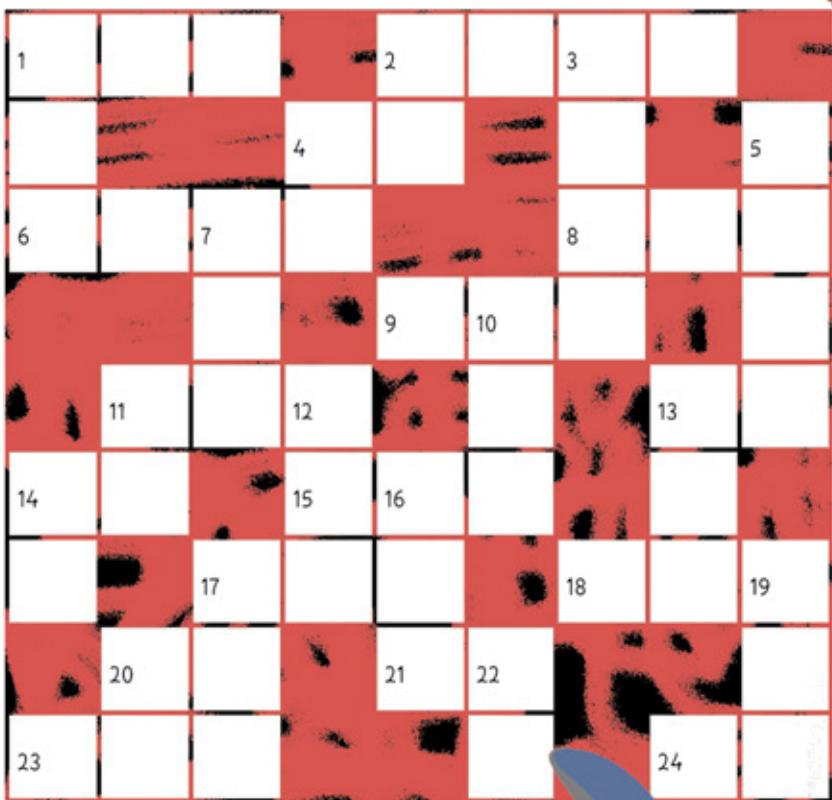
आदर्श वर्मा, सातवीं, नर्मदा वैली इंटरनेशनल स्कूल, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

बच्चों में प्रतिरोधक क्षमता होने के कारण बच्चों को ठण्डी चीज़ें खाने-पीने से मना किया जाता है।

वैष्णवी, पाँचवीं, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश



चित्र: हिमांशु, तेरह साल, मंजिल संस्था, दिल्ली



23

## सुडोकू 71

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? परं ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ उब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

21

23

13

8		3			7		9
7		9	8	4	3		
4			2	5	9		3
3	6	5		8			
9		4	6		5		
1		2	3			5	8
3				7	6	8	
4		9	2	8		3	6
							7

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

## पहेली चित्र

12

17



11



4



## उत्तराखण्ड सुरंग में फँसे मज़दूरों के नाम पत्र

हिताक्षी

चौथी

प्राथमिक विद्यालय बंगला पूठरी  
बुलन्द शहर, उत्तर प्रदेश

मज़दूर अंकल,

आप सभी को मेरा नमस्कार। मुझे टीवी पर देखकर पता चला कि आप वहाँ एक सुरंग में फँसे हुए हो। मुझे यह भी पता चला कि आप उत्तराखण्ड में हो। उत्तराखण्ड मेरे घर से दूर है। आपकी सुरंग पर एक पहाड़ गिर गया था। आप 41 लोग फँसे हुए हो। मैं आपको इसलिए पत्र लिख रही हूँ कि आप हार नहीं मानना। मैंने देखा कि आपको पाइप की मदद से खाना व ऑक्सीजन दिया जा रहा है। मुझे नहीं पता कि आप अन्दर क्या कर रहे होंगे। लेकिन आप डरना नहीं। मैंने टीवी पर देखा कि आपको निकालने के लिए एक बहुत बड़ी मशीन पहाड़ खोद रही है। मुझे उम्मीद है कि आप जल्दी ही बाहर होगे।

हिताक्षी



चित्रः अलफाज फारूक काझी, पाँचवीं, नाझरा विद्या मन्दिर हाईस्कूल, नाझरा, सोलापुर, महाराष्ट्र

जिगर सिटोले  
कक्ष - ५ वी



चित्र: जिगर सिटोले, पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक विद्यालय, डिरन्या, खरगोन, मध्य प्रदेश

## मेरे घर का काम-धन्धा

सेफिया

तीसरी, सी. एम. राइज विद्यालय  
राहतगढ़, सागर, मध्य प्रदेश

हमारे घर में दो भैंसें और पाँच बकरियाँ हैं। पापा भैंस चराने पास के खेत में जाते हैं। भैंसों से दूध निकलता है। लोग दूध लेने हमारे घर आते हैं। पापा बकरियों की पत्तियाँ भी लाते हैं। और बकरी ईद पर बकरों को बेच देते हैं। मेरा भाई पिकअप से गाँव-गाँव जाकर कबाड़ा खरीदने का काम करता है। मम्मी बीड़ी बनाने का काम करती हैं। मैं घर में झाड़ू लगाने और बर्तन माँजने का काम करती हूँ।

## बीते हुए पल

इमरान  
पॉचवीं

सर्वोदय कन्या विद्यालय, दिल्ली

मेरा नाम इमरान है। पहले मैं गाँव में रहता था। तब मैं पढ़ने नहीं जाता था और बहुत मज़े करता था। मैं दिन भर खेलता रहता था और खुश रहता था। लेकिन मेरे मम्मी-पापा मुझे दिल्ली लेकर आ गए और स्कूल में डाल दिया। फिर भी मैं खुश हूँ। पर मुझे अपने बीते हुए पल बहुत याद आते हैं। अगर मुझे वापिस यह पल जीने को मिलते तो मैं बहुत मज़े करता। तुम्हें अपने बीते हुए पल जीने का मन करता तो तुम क्या करते, बताओ।



चित्र: शांभवी, एलकेजी, मदर टेरेसा मिशन स्कूल, कानपुर, उत्तर प्रदेश

## खाने की परख

सोनू साहू  
सातवीं  
श्री गुरुनानक एम ई स्कूल, नगाँव, आसाम

एक दिन मैं होटल में गया। वहाँ पर मुझे एक डिश बहुत पसन्द आई। वह दिखने में भी बहुत अच्छी थी। लेकिन मेरे पास उतने पैसे नहीं थे। तो मैंने अपने बजट के अन्दर खाया और घर चला गया। और सो गया।

उसके बाद मैंने वही डिश अपनी माँ को बनाने के लिए कहा। माँ ने कहा आज नहीं कभी और। कुछ दिनों बाद मैंने फिर माँ से कहा। माँ ने बना दी। वह डिश किसी को भी पसन्द नहीं आई। और वह पूरी की पूरी मुझे ही खानी पड़ी। और कुछ दिनों तक मेरा पेट खराब रहा। फिर माँ ने मुझे दवाई लाकर दी जिससे मैं ठीक हो गया। और उस दिन से मैंने उसे नहीं खाया।

उस दिन मुझे पता चला कि जो खाना दिखने में सुन्दर हो या बहुत खुशबूदार हो वह हमारी सेहत के लिए अच्छा नहीं भी हो सकता है।



चित्र: नन्दिनी, दूसरी, प्राथमिक शाला होलीमाल,  
महेश्वर, खरगोन, मध्य प्रदेश

## मेरी दादी

प्रिया काकड़े  
आठवीं  
प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मेरी दादी की एक दुकान थी। नई ही थी। मैं उसे तुरन्त देखने गई। मैं दुकान पहुँची। तब मेरे बाल खुले थे। दादी कुछ तो काम कर रही थीं। जैसे ही दादी ने मुड़कर मेरी तरफ देखा, वैसे ही बोलीं, “ऐ, बाल क्यों खोलकर आई हो।” तो मैं बालों को बाँधने लगी तो फिर बोलीं, “अब बालों को मत हाथ लगा।” तो मैं गुस्सा होकर दरवाजे के रास्ते में जा बैठी। तो फिर बोलीं, “अरे! रास्ते में मत बैठा।” तो मैं उठकर कुर्सी पर बैठी। कुर्सी पर बैठकर मैं पैर हिला रही थी। तो बोलीं, “अब पैर मत हिला।” अन्त में मैं पैर पर रखकर बैठी। तो फिर से बोलीं, “अरे! पैर पर पैर मत डाला।” मैं अब बहुत ही गुस्सा हो गई थी। मैं दुकान से उठी और घर जाने लगी। जाते वक्त मैं सीटी बजा रही थी। तो दादी फिर बोलीं, “अरे! सीटी मत बजा।” क्योंकि उस वक्त रात हुई थी। तो देखा कैसी हैं मेरी दादी... पर मुझे प्यार भी करती हैं।

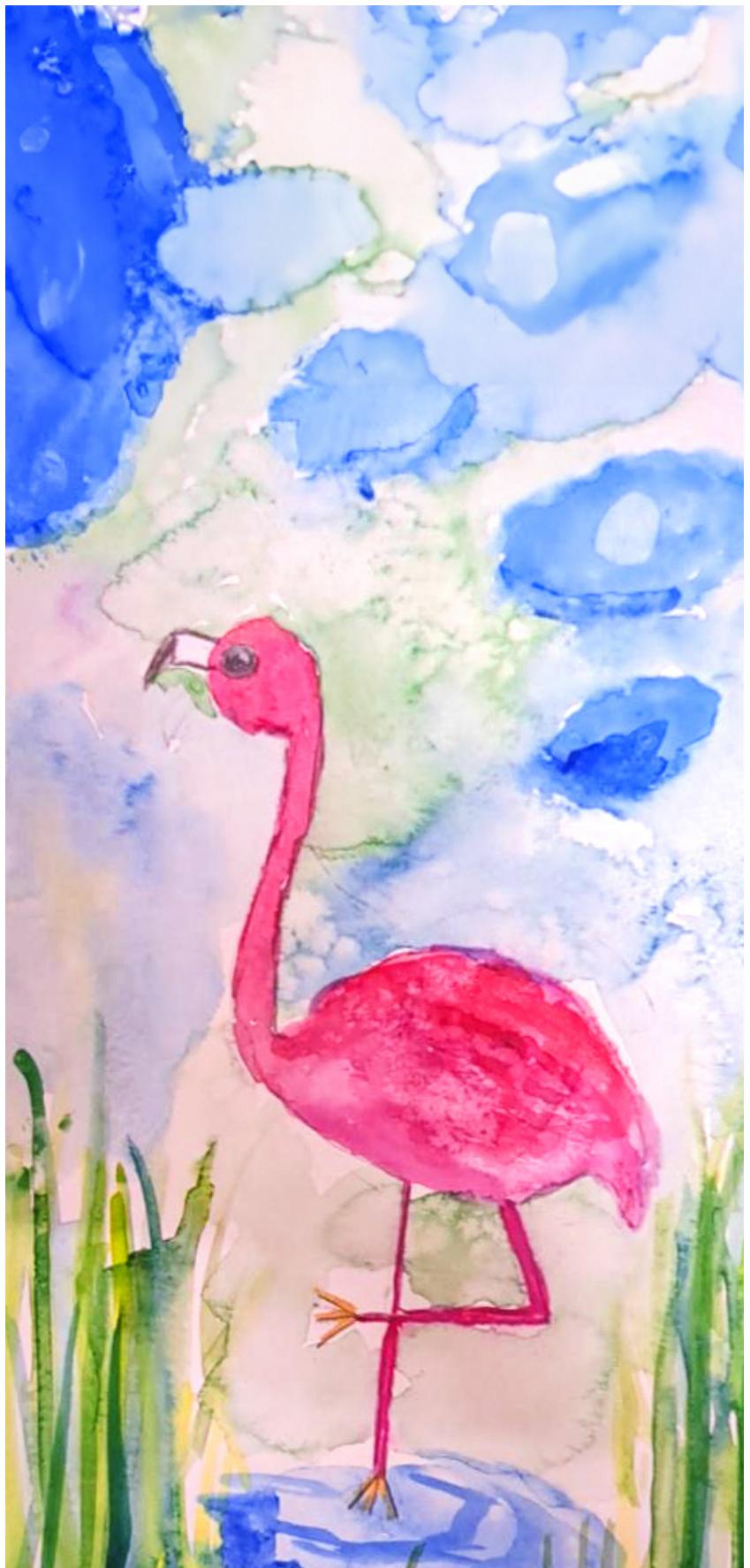
## राजहंस

ननकी कौर बावा  
चौथी  
कार्बेट, शिव नाडर स्कूल  
नोएडा, उत्तर प्रदेश

ओ! राजहंस, ओ! राजहंस  
आप कितनी सुन्दर हो  
गुलाबी रंग की लम्बी चिड़िया  
आप कितनी सुन्दर हो  
दूर देश से आती हो

ठण्ड से बचकर आई हो  
आप कहाँ से आई हो  
गुजरात, अफ्रीका या ईरान  
ओ! राजहंस, ओ! राजहंस  
आप कितनी सुन्दर हो

आपके पैर बहुत पतले हैं  
आपकी चोंच गुलाबी,  
सफेद और काली है  
आप तालाब के पास मिलती हो  
अकेले कम ही दिखती हो  
सहेलियों से घिरी रहती हो



चित्र: ननकी कौर बावा, चौथी, कार्बेट, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश



## मेरे आम की कहानी

सीमा यादव

छठवीं

शाला आदर्श नगर, सीतापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

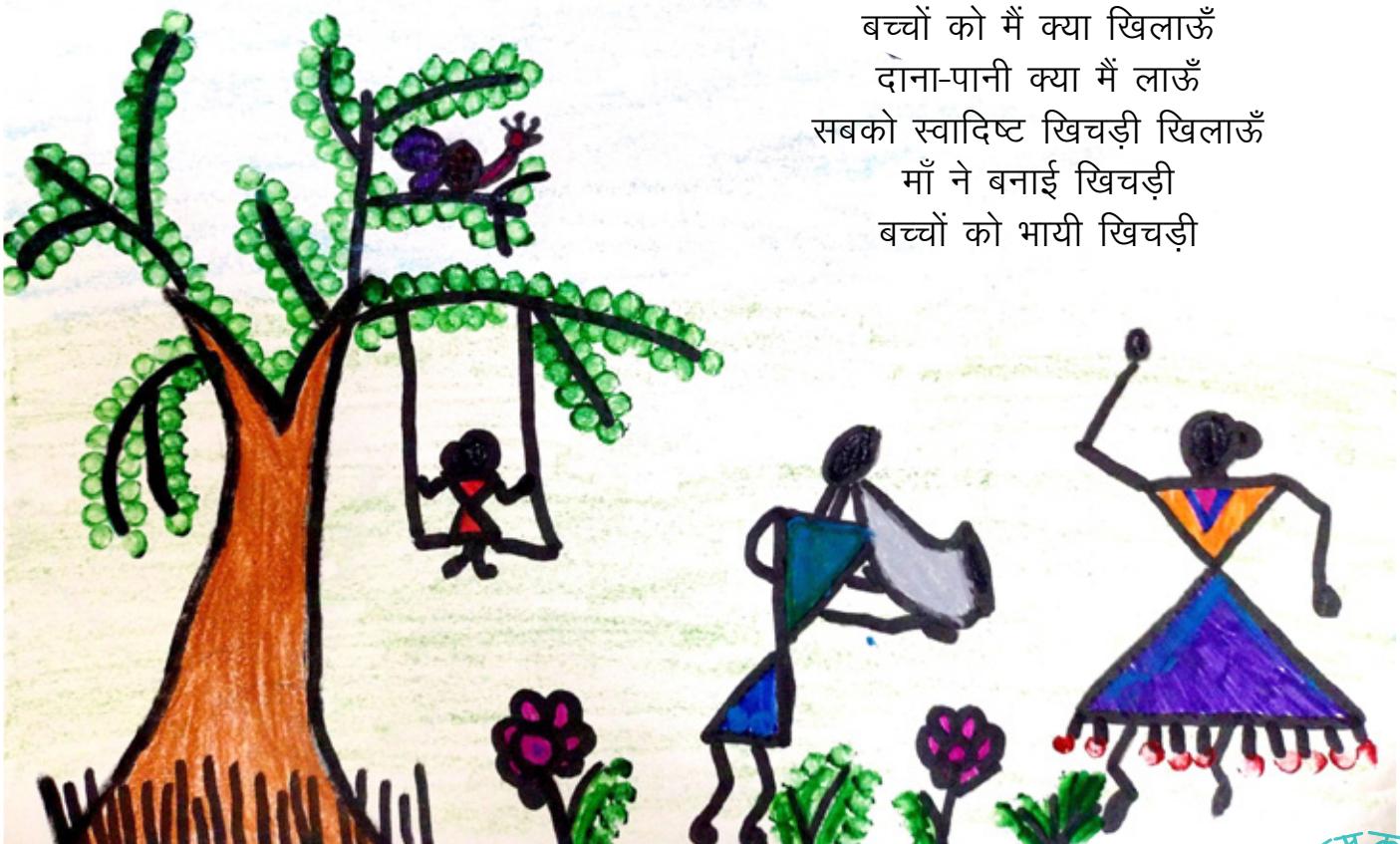
एक दिन मैं बगीचे में ठहल रही थी। मुझे बगीचे में बहुत अच्छा लग रहा था। बगीचे में हमारा आम पक गया था। तभी बहुत तेज हवा आई और हमारे आम गिरने लगे। मेरे भाई-बहन दौड़ते-दौड़ते आए और मुझसे आम छीन लिए। मैं रोने लगी। मेरे भाई-बहन आए और मुझे सब आम दिए। फिर मैं दोनों को एक-एक आम दी। और हम सब मज़े-से खाने लगे।

## खिचड़ी

हिमांशी

सातवीं, आरोही बाल संसार

प्लॉडा, नैनीताल, उत्तराखण्ड

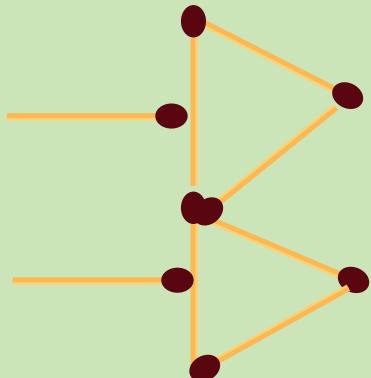


चित्र: साएश गुप्ता, चौथी, दि हेरिटेज एक्सपीरियंसल लर्निंग स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

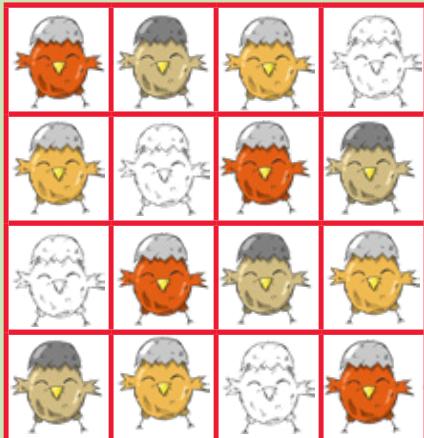
1.

मै	री	क्यू	री	चा	नी	जॉ	न्यू	ग्रा
वि	हो	मै	पा	ल्स	बी	न	ट	ह
क्र	मी	क्स	ज	डा	र	डॉ	न	म
म	भा	प्लां	यं	विं	ब	ल्ट	अ	बे
सा	भा	क	त	न	ल	न	ब्डु	ल
रा	मे	घ	ना	द	सा	हा	ल	आ
भा	य	री	ल्लि	ज	ह	ब	क	इं
ई	पि	क्यू	क	ग	नी	सु	ला	स्टी
स	के	ल्वि	र	सी	वी	र	म	न

6.



8.



2.

माना कि शुरू में रिया के पास  $x$

गुब्बारे थे।

इसका एक चौथाई जोड़ने पर हुआ

$$x + x/4 = 15$$

$$(4x+x)/4 = 15$$

$$5x = 15 \times 4$$

$$5x = 60$$

$$x = 12$$

तो, शुरू में रिया के पास 12 गुब्बारे थे।

3.

संख्याओं का पैटर्न ये है:

$$(2+8) - 1 = 9$$

$$(3+2) - 1 = 4, \text{ इसलिए}$$

$$(3+6) - 1 = 8$$

2	8	9
3	2	4
3	6	8

4.

माना कि सबसे छोटे बच्चे को  $x$  रूपए दिए। फिर

हरेक बच्चे को उससे 2 रूपए ज्यादा दिए, इसलिए

$$x + (x + 2) + (x + 2 + 2) + (x + 2 + 2 + 2) +$$

$$(x + 2 + 2 + 2 + 2) = 200$$

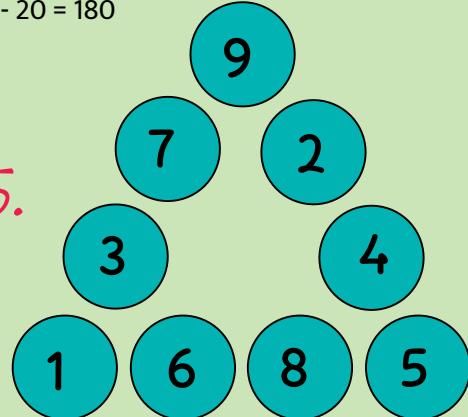
$$5x + 20 = 200$$

$$5x = 200 - 20 = 180$$

$$x = 180/5$$

$$x = 36$$

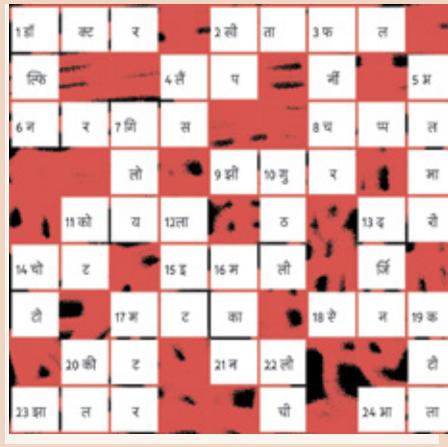
5.



7.

क्योंकि वो इन्कम टैक्स  
ऑफिसर थे।

इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

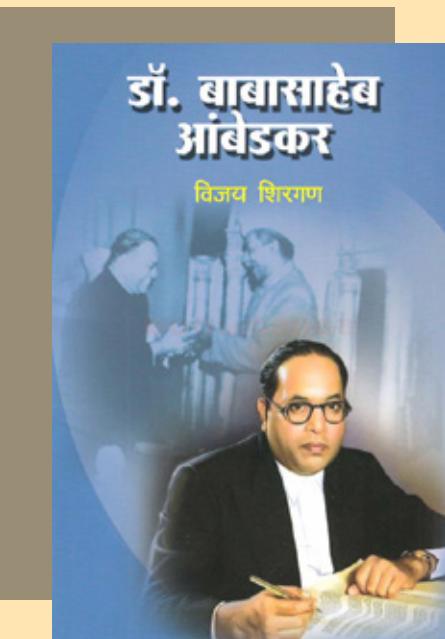


सुडोकू-71 का जवाब

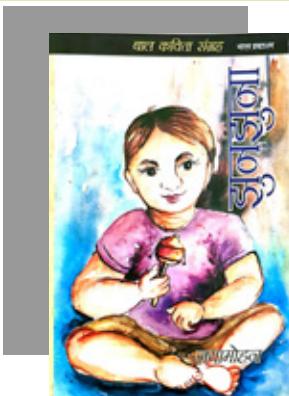
8	5	3	1	6	7	2	4	9
7	2	9	8	4	3	5	6	1
4	1	6	2	5	9	7	8	3
3	6	5	7	8	2	9	1	4
9	8	4	6	1	5	3	7	2
1	7	2	3	9	4	6	5	8
2	3	1	4	7	6	8	9	5
5	4	7	9	2	8	1	3	6
6	9	8	5	3	1	4	2	7

# किताबें कुछ कहती हैं...

मैंने डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर नामक यह किताब पढ़ी है। इसमें मुझे बालपण (बचपन) वाला भाग बहुत पसन्द आया। बाबासाहेब को पढ़ना बहुत अच्छा लगता था। उनके गुरुजी उन्हें पाठशाला में तो आने देते। पर कक्षा में बाहर ही बैठकर पढ़ने के लिए कहते। बाबासाहेब बाहर से ही पढ़ते। वे खिड़की से देखकर लिखते। उनके गुरुजी कहते तुम्हें कौन-सा पढ़कर बैरिस्टर बनना है। पर बाबासाहेब उनकी बात पर ध्यान नहीं देते और अपनी पढ़ाई पर ही ध्यान लगाते थे। मुझे यह कहानी पसन्द आई क्योंकि बाबासाहेब नहीं होते तो बहुत घटनाएँ दलितों को झेलनी पड़तीं।



पुस्तक: डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर  
लेखक: विजय शिरगण  
प्रकाशक: ज्ञानगंगा प्रकाशन  
समीक्षा: प्रणय काकड़े, नौवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र  
भाषा: हिन्दी



पुस्तक: झुनझुना  
लेखक: जयामोहन  
प्रकाशक: भारत प्रकाशन  
समीक्षा: अनुराग कुमार,  
किलकारी बाल भवन,  
पटना, बिहार  
भाषा: हिन्दी

**झुनझुना** किताब का नाम सुनते ही मुझे यह गाना याद आया – बुलबुला रे बुलबुला...। यह किताब कविताओं का खजाना है। मन करता है मैं भी कविता में घुस जाऊँ। इसमें कुल 29 कविताएँ हैं। बिल्ली जी, गौरैया, पूसी, तितली, चुनकी, सैर... आदि। इसकी लोरी वाली कविता पढ़कर मुझे माँ की ममता याद आ गई। मुझे तो पहाड़ा वाली कविता में सबसे ज़्यादा मज़ा आया:

दो एकम दो  
दो दूनी चार  
बच्चों से सब  
करते प्यार...

जैसे पहाड़ा याद करते हैं ना हिन्दी में वैसे ही इस किताब में 2 का पहाड़ा है। और जो बिल्ली की कविताएँ हैं ना शुरुआत में उसे तो पढ़कर मज़ा ही आ गया। चूहे-बिल्ली का खेल, भाग-दौड़ कितनी हँसी दिलाता है। एक बात और कि इस किताब में सबसे कल्पनाशीलता वाली कविता मुझे सगाई वाली लगी:

भिण्डी की हो रही सगाई  
शकरकन्दी नाच रही भाई

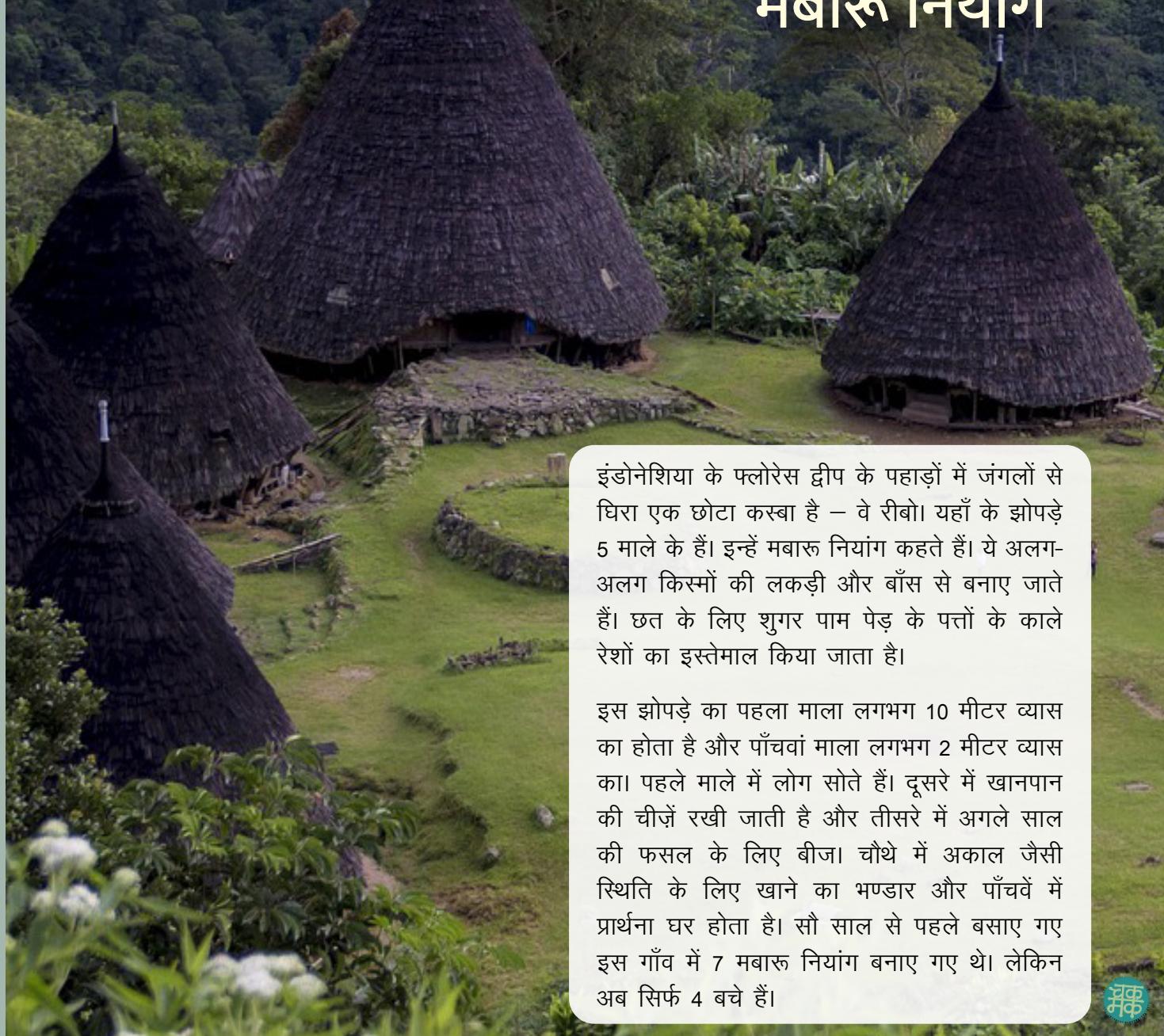
यह किताब बहुत अच्छी लगी। मैं लेखक का धन्यवाद अदा करना चाहता हूँ कि उन्होंने हम बच्चों के लिए इतनी प्यारी कविताएँ लिखीं।



# तुम भी जानो



## मबारू नियांग



इंडोनेशिया के फ्लोरेस द्वीप के पहाड़ों में जंगलों से घिरा एक छोटा कस्बा है – वे रीबो। यहाँ के झोपड़े 5 माले के हैं। इन्हें मबारू नियांग कहते हैं। ये अलग-अलग किस्मों की लकड़ी और बाँस से बनाए जाते हैं। छत के लिए शुगर पाम पेड़ के पत्तों के काले रेशों का इस्तेमाल किया जाता है।

इस झोपड़े का पहला माला लगभग 10 मीटर व्यास का होता है और पाँचवां माला लगभग 2 मीटर व्यास का। पहले माले में लोग सोते हैं। दूसरे में खानपान की चीज़ें रखी जाती हैं और तीसरे में अगले साल की फसल के लिए बीज। चौथे में अकाल जैसी स्थिति के लिए खाने का भण्डार और पाँचवें में प्रार्थना घर होता है। सौ साल से पहले बसाए गए इस गाँव में 7 मबारू नियांग बनाए गए थे। लेकिन अब सिर्फ 4 बचे हैं।



प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदेरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित। सम्पादक: विनता विश्वनाथन।